Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi HiraL 2

13. B. 39. Hindi Hiral 2

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Śālā-gīta-candrikā.

शालागीतचन्द्रिका

अर्थात्

पाठशालाओं के पाठकों और बालकों के
निमित्त गाने की पुस्तक

जिसे

बाबू हीरालाल
असिस्टंट मास्टर ज़िलास्कूल बिलासपुर सेन्ट्रल
प्राविन्सेज़ ने बनाई

सो

SHALA GITA CHANDRIKA

OR

A HINDI SONG-BOOK FOR SCHOOLS

PREPARED BY

MUNSHI HIRA LAL,
ASSISTANT MASTER,
ZILA SCHOOL, BILASPUR,
CENTRAL PROVINCES.

ALL RIGHTS RESERVED.

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में छपी
अगस्त सन् १८८१ ई०

सिवाय इस यंत्रालय के किसी को अधिकार नहीं है कि इसको
वा इसके आशय को छापे वा छपवाये ॥

शाला गीत चन्द्रिका ॥

भूमिका ॥

हे बिद्या दान दायक पाठको । हे बिद्या गुण गाहक बालको। यह स्वनिज हस्त स्थिता शत गति कथिता सनग मता शाला-गीतचन्द्रिका पुस्तक आप लोगोंकी कृपादायका सुमन भायका सेवामें सबिनय उपस्थितकी जाती है इस राग रागिनी निबन्धी तालामिश्रिता व प्रत्येक बिषय संबंधी शालार्थ भरिता पुस्तकमें लघु दीर्घ सबै शतपद एकत्र हैं जो अगणित वा बहुत राग रागिनीमय अर्थात् आसावरी, ईमन, कजलिया, कल्याण काफी, कान्हड़ा, केदारा, खम्बाज़, ग़ज़ल, चुटकला, जंगला झंझोटी, टोड़ी, ठुमरी, दादरा, देश, देवसांग, धनाश्री परज, पूर्बी, भीमपलश्री, भूपाली, भैरवी, मुलतानी, मेघ, योगिया, ललित, बसंत, बिलावल, बिहाग, सारंग, सिंधु, सोरठ, सोहनी, इत्यादि नाना प्रकारिक वा सर्व सारिक स्वरूपों में और ध्रुपद ख़यालादि से सहित रहित मध्यमान तिताला इत्यादि समय सम्बन्धी वा कालनीबन्धी तालोंमें सुविष्टहो होकर सौंदर्य्यता व समाधुर्य्यता दर्शित है—इसका जन भायक व हर्षामेग दायक अत्यानन्द इसी चन्द्रिका के निरखने परखने व गाने गवानेसे सस्वग्रमता बिलगित होगा लेखन कृतहोना निस्फलताका काय्य करना है इसमें कोई रास्यवारी पचास प्रकारी राग रागनियां पद पदोंमें अनवयितहो होकर बिकाशितहै और ये शत गायनार्थी पद ऐसे २ स्थितानुमानी व साक्षात जानी बनावटोंमें सुरचित हैं कि इन लगभग पचास राग रागनियोंकी

कई गुणित राग रागनियां होसक्ती हैं अथवा और राग रागनियोंके दर्शार्थ ये शतपद कई शतपद होसक्ते हैं अर्थात् इनमेंका एक २ पद ऐसा रचित नहींहै कि जिस रागनी और ताल में वह लिखित है वह उसी रागनी और तालमें दर्शित हो गाया जावे नहीं २ वह पद उसी लिखित रागनी और तालमें गाया जावेगा· परंतु एक २ पद व वही २ पद कई राग रागनियों में भिन्न २ तालों के द्वारा गाया जासक्ता है जैसे इसमें के सोरठ दर्शीपद देश, ठुमरी, होली, बसन्त, सारंगमें, कान्हड़ा, रूपी पद केदारा, कल्याण, भीमपलश्री, बिलावलमें, काफी वाले पद खमाच ठुमरी, बसन्त, सोरठमें, जंगलावाले पदधनाश्री, भैरवी, काफीमें इत्यादिमें आदिक, पदगायन सुप्रकाशित व साहट भाषित हो सक्ते हैं· ऐसीही कुछ २ दशा तालों में भी गत होसक्ती है यह कहां पर्य्यंत लेखन से बोधितहोवे· गायनज्ञ लोग ऐसी २ रसिका बातें स्वबुद्धि बूझसे भली भांति ज्ञातकर लेंगे और इन गायन दर्शी शतपदोंमें वेही २ अर्थ लिखित व भरितहैं जो २ किपाठशालाके पाठकों और शिष्योंके मध्यशालाके सम्बंधार्थ, उपकारार्थ, उपयोगार्थ, कारणार्थ· लाभमयफलार्थ, सुवर्त्तावार्थ आद्यार्थप्रसिद्ध, व अप्रसिद्ध, रूपसे, उपयुक्तहोते हैं अर्थात् येहैं जैसे पठन पाठन, लेखन लिखन, व्याकरण भूगोल, इतिहास अंकगणित, बीजगणित रेखागणित, व्याख्या, पदच्छेद, परीक्षालेख, आदि बिषयों की शिक्षा, फल, उपकार, आदि, काला तख़्ता, समय· विभाग, मेजकुरसी, बेञ्च, अलमारी, रजिस्टर, आदि सामग्रियों का योग लाभ, बर्त्ताव, आदि, विज़िटरों, अफसरों, मातहतों, पाठकों, बालकों, आदि जनोंका, आपसमें मान, बर्त्ताव आदि, उपरांत, गाना बजाना, तालसुर, कसरत, खेलना, कूदना, सत्यता, मिथ्या कामादिरिपु, कृपा, सुनाम, इत्यादि बातोंका बर्णन संक्षिप्त, रूपोंमें बर्णित हैं शालास्मबंधी कोई बातती सकाठिन्यता त्यागनी पड़ीहै सो

सूक्ष्मरूप उक्त बिषय हस्तग्रस्त चन्द्रिकामें साभि प्रायता हंसमुख हुए हैं इसस्थानमें इतनीही यथेष्टता दर्शित करनीहै कि गायक जन, पाठक जन, और शिष्य जन सस्वयम्बुद्धि जानकर सक्ते हैं कि कथिता चन्द्रिका गान गायनी वा पठन पाठनी किरणोंके द्वारा क्या २ और कैसे २ लाभवाफल बिकाशित व प्रकाशित करने वाली हैं और करती है ॥

इस पुस्तकमें के शब्द वा वाक्य ऐसे २ सूक्ष्म २ सहज २ साधारणा२हैं कि जो प्रतिदिवस रजनी हिन्दी पाठकोंऔर शिष्योंके मध्य बार्ता वीपयुक्तहैं सकाठिन्यता भरित शब्द मय वाक्य बनाना वा भाषारचित करनी भाषाकी सौंदर्य्यताकी बिनष्टता व भ्रष्टता समझी गईहै औरसाहज्यता रूपीशब्द मयवाक्य रचित करना वा भाषा भाषितकरनी भाषा की सौंदर्यता को आभूषणता जानीगई है शाला सम्बन्धी व गायन सम्बन्धी विषयों पर जो जो अर्थ सूक्ष्मपूर्वक व बिस्तार पूर्वक बर्णित कृत हैं सो यह न समझाशित होवें क सहित ब्याज बट्टे के कुल पूंजी इतनीहीहै— नहीं,नहीं, इतनेपर तो पुस्तक कर्त्ताकी उत्सुक अभिलाषिका असंतुष्ठता नहीं बुझी यदि वह मन वृद्धि का तृषा बुझाई जावेतो यथावश्यक बिस्तार पूर्वक बिवेकों व सोचबिचारों को प्रकट करनेसे न ज्ञात होवे, कि यह चन्द्रिकाकी गुलाई क्या अनुमानी होगी तो बिनय है कि प्रत्येक बातका सारार्थभी सारार्थ में, वसूक्ष्मार्थ में भी सूक्ष्मार्थ में, सक्षमा व साभि प्राय मान्य और स्वीकृत होवे जो२ पाठक जन शाला संबन्धी कार्य्योंमें दीर्घानुभव रखते हैं सो २ जन सुभांति ज्ञात करलेवेंगे अच बर्णित अल्प सारार्थ में निज दीर्घ प्रसारार्थ मिश्रित करकर उपकारार्थी स्वकार्य्यों को सिद्धता प्राप्त करावेंगे और इन शत गीतों में लगभग पचास प्रकारिक व सर्ब रस सरिक पद बसंत, होली,ठुमरी, खमाच, आदि सहज २ रूपों में रचित होहोकर पुस्तक का अर्ध भाग घेरेहै क्योंकि बर्तमान समय में ऐसी

पुस्तक आरंभ कारकों के हेतु मान्य हुई हैं और अर्ध भाग में सुममना नन्ददायी मनोमंगता भायी भिन्न सुभिन्न राग रागनियां विदार्शित हैं यहां भी ग्रन्थ कर्ता संतुष्ट नहीं है पर क्षुधित रहा जाता है परंतु कल्पित गणित गीतों से असंख्य व बहुत राग रागनियों कादर्शाना असंभाव्यता पर स्थित होता है चिन्ता नहीं यदि उक्त चन्द्रिका प्रिय २ महाशयों को मोहितकरेगी तो इच्छित समय मिलनेपर सर्व प्रकार अधिक तर फलदायक दीर्घतर व उत्तम तर ग्रन्थ रचित किया जावेगा ॥

इसमें गाने गवाने वालों को व पठन पाठन करने वालों की स्वेच्छा पर धृत होता है कि जिस राग व रागनी की गीत व जिस नम्बर का पद व जिस बिषय पर का पद देखना वा गाना गवाना चाहें वे उसे देखें वा गावें गवावें यह कुछ अवश्य नहीं है कि लिखितानुसारी प्रथम, द्वितीय, तृतीय, आदि नम्बरों से लगा लगावें सहज २ रागनियों से भरित पद जैसे २ प्रथम पढ़े वा गाये जावें वैसे २ वो उत्तम तर उपयुक्त होंगे दो प्रकारी सूचीपत्र धृत हैं अर्थात् शाला सम्बन्धी जिस बिषय पर देखना चाहें उस बिषय पर के नम्बर के पद देखें और राग रागनियों के अनुसार जिस राग रागनी का पद गाना चाहें उस रागनी की नम्बरी पद अ, आ, आदिसे निकाल कर गावें ॥

इस चन्द्रिका में किसी जनको अधिकार नहीं है कि किसी प्रकार की कुछ अदल बदल व उलट पुलट करें उन्हें जो कुछ करना धरना हो वा जो कुछ दोष यदि उनकी दृष्टि में पड़े शोधित करना हो तो चिट्ठी चपाती के द्वारा ग्रन्थ कर्त्ता को बिदित करें तो, सो सब सधन्यबाद मान्य किया जावेगा और उन प्रश्नों का उत्तर भली भांति दिया जावेगा ॥ इत्यलम् ॥

सन् १८८१ ई० हीरालाल ॥

शाला गीतचन्द्रिका ॥

शाला विषयों पर ॥

निर्घण्ट ॥

नम्बर	विषय	पृष्ठ
१	अपना सान्सारिक धर्म्म ..	१
२	विश्वास ..	१
३	विद्या ..	१
४	विद्या ..	२
५	उत्तम चाल ..	३
६	दया ..	३
७	इतिहास सिखाना ..	३
८	इतिहासमें मुख्य बातें ..	४
९	पाठकों का धर्म्म ..	४
१०	गायन विद्याका बर्णन ..	५
११	सुरों का वर्णन ..	६
१२	गाना बजाना ..	६
१३	गाना बजाना ..	७
१४	नाम ..	७
१५	शाला में कालेतख्ते काउपयोग ..	७
१६	समकाली पढ़ना ..	८
१७	समय विभाग महाराजाधिराज ..	९
१८	शासन ताड़न ..	१०
१९	बेत शासन ..	१०
२०	अंक गणित की शिक्षा ..	११
२१	बीज गणित की शिक्षा ..	११
२२	रेखा गणित ..	१२
२३	समयविभागका मान ..	१२

पाठ	विषय	पृष्ठ
२४	समय विभागके फल ..	१३
२५	शाला सामग्री ..	१३
२६	पढ़ना, अर्थ, और व्याकरण की सामग्री ..	१४
२७	पठन शिक्षा ..	१५
२८	पढ़ने के गुण ..	१५
२९	व्याकरण शिक्षा ..	१६
३०	व्याकरण शिक्षा ..	१७
३१	भूगोल शिक्षा ..	१७
३२	समय विभाग ..	१८
३३	भूगोल की सामग्री ..	१८
३४	दफ़ा बनाना ..	१९
३५	अर्थ समझाना ..	२०
३६	कंठाग्र करना ..	२०
३७	शाला में सदा जाना ..	२१
३८	हिज्जे करना ..	२१
३९	खेलने का स्थान ..	२२
४०	क़सरत करना ..	२२
४१	क़सरत करना ..	२३
४२	खेलने का स्थान ..	२३
४३	विद्या ..	२४
४४	अफ़सरोंके साथ बर्ताव ..	२४
४५	मातहतोंके साथबर्ताव ..	२५
४६	उत्तम व्याख्या ..	२५
४७	पुस्तकालय ..	२६
४८	माबापों की और बड़ों की आज्ञा ..	२६
४९	व्याख्या ..	२७

पाठ संख्या	विषय	पृष्ठ
५०	विज़िटरों को मानना ..	२७
५१	गुरू को मानना ..	२८
५२	छेरिपु ..	२८
५३	इबारत लिखना ..	२९
५४	इबारत लिखना ..	२९
५५	पदच्छेद करना ..	३०
५६	रजिस्टर ..	३०
५७	समय विभाग का उपयोग ..	३१
५८	नकशा खींचना ..	३१
५९	परीक्षा पत्र ..	३२
६०	गणितों कीसामग्री ..	३३
६१	कुरसी मेज़ ..	३३
६२	नृत्य मंडल ..	३४
६३	शाला सामान ..	३४
६४	चिट्ठी लिखना ..	३५
६५	निबन्ध लिखना ..	३५
६६	निबन्ध लिखना ..	३६
६७	ध्वनि धृति ..	३६
६८	शुद्ध लिखना ..	३७
६९	क़वायद ..	३७
७०	उल्था करना ..	३७
७१	उल्था करना ..	३८
७२	उल्था ..	३८
७३	समाचार पत्र ..	३९
७४	शब्दकोष ..	३९
७५	समयव्यय ..	३९

नम्बर	विषय	पृष्ठ
७६	सत संगति	४०
७७	सत संगति	४०
७८	आज्ञा का मान और अमान	४१
७९	सभा	४१
८०	मधुर भाषा	४२
८१	कटु भाषा	४२
८२	सभा लाभ	४२
८३	सभा	४२
८४	स्वच्छतावा कपटहीनता	४३
८५	सृष्टि स्वरूपता	४३
८६	मानसिक स्वच्छता	४४
८७	दैहिक स्वच्छता	४४
८८	मानसिक स्वच्छता	४५
८९	दैहिक स्वच्छता	४५
९०	कामादिक रिपु	४६
९१	उत्तम चाल	४६
९२	कृपा	४७
९३	सत्यता	४७
९४	मिथ्या	४७
९५	दान	४७
९६	सहायता	४८
९७	नाम	४८
९८	मनैक्यता	४९
९९	गीतचन्द्रिका	४९
१००	गीतचन्द्रिका	४९

शालागीत चन्द्रिका ॥

राग रागनी और तालोंपर ॥

निघंट ॥

गीत	राग, रागनी	पृष्ठ
९९	आरती ..	४६
१००	आरती ..	४६
५०	आसावरी—तालतिताला ..	२१
८२	आसावरी—ताल मध्यमान ..	४२
५१	ईमन—ताल तिताला ..	२८
६३	ईमन कल्याण—ताल चौताला—धुपद ..	४०
६४	ईमन कल्याण—ताल चौताला—धुपद ..	४०
५४	कजलिया—ताल दादरा ..	२६
३५	कहरवा—ताल दादरा ..	२०
४६	कहरवा—ताल दादरा ..	२१
८३	कल्याण—ताल तिताला ..	४२
१६	काफी—ताल मध्यमान ..	८
१७	काफी—ताल मध्यमान ..	६
२०	काफी—ताल मध्यमान ..	११
६०	काफी—ताल मध्यमान ..	४६
४४	कान्हड़ा—ताल तिताला ..	२४
८५	कान्हड़ा—ताल तिताला ..	४३
४५	केदारा—ताल तिताला ..	२५
८८	केदारा—ताल तिताला ..	४५
१	खमाच—ताल मध्यमान ..	१
२६	खमाच—ताल मध्यमान ..	१६
६६	खमाच—ताल मध्यमान ..	३६
७०	खमाच—ताल चौताला—धुपद ..	३७

नम्बर	राग, रागनी		पृष्ठ
७१	खमाच—ताल चौताला—ध्रुपद	..	३८
७७	खमाच—ताल मध्यमान	..	४०
६५	खमाच—जलद तिताला	..	४७
३६	गज़ल	..	२०
३७	गज़ल	..	२१
३८	गज़ल	..	२१
५३	चुटकला—ताल दादरा	..	२६
६४	चुटकला—ताल दादरा	..	३५
४६	चौपाई—ताल मध्यमान	..	२५
२८	जङ्गला—ताल मध्यमान	..	१५
१८	झंझोटी—ताल ठुमरी	..	१०
३१	झंझोटी—ताल मध्यमान	..	१७
५२	झंझोटी—ताल मध्यमान	..	२८
८४	झंझोटी—ताल मध्यमान	..	४३
५६	टोड़ी—ताल मध्यमान	..	३०
२४	ठुमरी—ताल उसीका	..	१३
२६	ठुमरी—ताल उसीका	..	१४
३०	ठुमरी—ताल मध्यमान	..	१७
६६	ठुमरी—ताल मध्यमान	..	३७
४३	तोटक—ताल मध्यमान	..	२४
१३	दादरा—ताल उसीका	..	७
१४	दादरा—ताल उसीका	..	७
६०	दादरा—ताल उसीका	..	३३
६३	दादरा—ताल उसीका	..	३४
२	देश—ताल मध्यमान	..	१
१२	देश—तालजलद तिताला	..	६

नम्बर	राग, रागनी	पृष्ठ
७५	देश—तालमध्यमान ..	३६
७४	देवसांग—तालझांपताल—ध्रुपद ..	३६
७८	देवसांग—तालझांपताल—ध्रुपद ..	४१
३२	धनाश्री—ताल मध्यमान ..	१८
५	पद भजन—ताल मध्यमान ..	३
६५	परज—ताल तिताला ..	३५
२३	पूर्बी—तालमध्यमान ..	१२
५५	पूर्बी—ताल तिताला ..	३०
६१	भीमपलश्री—ताल मध्यमान ..	३३
६८	भीमपलश्री—तालमध्यमान ..	३७
७२	भूपाली—ताल पटताल—ध्रुपद ..	३८
७	भैरवी—ताल मध्यमान ..	३
२१	भैरवी—ताल मध्यमान ..	११
२५	भैरवी—ताल चौताला ..	५३
७३	भैरवी—ताल श्लथ तितालो ..	३६
८६	मुलतानी—ताल तिताला ..	४५
४७	मेघ—ताल झांपताल ..	२६
६१	योगिया—ताल मध्यमान ..	४६
४८	ललित—ताल तिताला ..	२६
६२	ललित—ताल तेवरा—ध्रुपद ..	४७
३६	लावनी ..	२२
६०	लावनी ..	४८
१५	वसन्त—ताल मध्यमान ..	७
३३	वसन्त—ताल मध्यमान ..	१८
४०	वसन्त—ताल मध्यमान ..	२२
४१	वसन्त—ताल मध्यमान ..	२३

नम्बर	राग, रागनी	पृष्ठ
५७	वसन्त—ताल मध्यमान	३१
६७	वसन्त—ताल मध्यमान	३६
७६	वसन्त—ताल मध्यमान	४०
३४	वसन्तबहार—ताल एकताला	१९
५९	वसन्तबहार—ताल एकताला	३२
४२	बिलावल—ताल चौताला	२३
६	बिहाग—ताल मध्यमान	३
२७	शारंग—ताल मध्यमान	१५
१९	सिन्धु—तालमध्यमान—ख़याल	१७
८१	सिन्धु—ताल मध्यमान—ख़याल	४२
६६	सिन्धु—ताल तेवरा—ध्रुपद	४८
११	सुहब—ताल एकताला	६३
५८	सोरठ—तालमध्यमान	३१
६८	सोरठ—ताल तेवट—ध्रुपद	४९
८	सोहनी—ताल आड़ा ठेका—ख़याल	४
८०	सोहनी—ताल आड़ा ठेका—ख़याल	४२
३	होली—ताल मध्यमान	१४
४	होली—ताल मध्यमान	२
९	होली—ताल मध्यमान	४४
१०	होली—ताल मध्यमान	५३
२२	होली—ताल मध्यमान	१२
६२	होली—ताल मध्यमान	३४
७९	होली—ताल मध्यमान	४१
८६	होली—ताल मध्यमान	४४
८७	होली—ताल मध्यमान	४४

॥ शालागीतचन्द्रिका ॥

(१)

अपनासान्सारिकधर्म्म ॥

खमाचकी ठुमरी—तालमध्यमान ॥

करम धरम जगको तो धसवोरे ॥
तन मन धनसे निजकर बलतें, सहायता सुसहाओरे ।
दया मया सब जीवन ऊपर, करो करो कर धाओरे ॥ १ ॥
भल भल काम न कारज करके, बड़ो नाम सुगहाओरे ।
मरण काल पश्चात् चले सो, बहु उपकार लगाओरे ॥ २ ॥

(२)

विश्वास ॥

रागनी देश—तालमध्यमान ॥

विश्वास रत को है बड़ो गेह ॥
सब काज करो सु विश्वास तें, प्रीति सुनीति सनेह ।
भलो बुरो जेस न जस होवे, करो विश्वास समेत ॥ १ ॥
सत्य सत्य कर यही कहावत, होवत महा न गेह ।
छोटो बड़ो कठिन सहज मंही, करो विश्वास एह ॥ २ ॥

(३)

बिद्या ॥

होली—तालमध्यमान ॥

सोचके देखो या मन मेंरे । बिद्या बड़ी है या तन मेंरे ॥
बिद्या बड़ी है बिद्या भलीहे , या जगके जन मेंरे ।

अजर अमर सम नामीहोवे, बढ़ती हो धन मेंरे ॥
सुभला या तन मेंरे ॥ १ ॥
विद्याके बल ईश्वर जाने, ज्ञान अज्ञानन मेंरे।
पाति चपाती द्वारा होवे, भ्राता नगर न मेंरे ॥
सुभला या तन मेंरे ॥ २ ॥
भल राजन मों मान करावे, पूरन अन धन मेंरे।
देत सुबाढ़े अदेत घाटे, जयहो जगरन मेंरे ॥
सुभलाया तन मेंरे ॥ ३ ॥
सुख आनन्द समटि सुआवें, भाजन बिघन न मेंरे।
देखो ईश्वर निकट सुअबे, कहं लगि गुण इन मेंरे ॥
सुभला या तनमेंरे ॥ ४ ॥

(४)

विद्या ॥

होली—ताल मध्यमान ॥

विद्या बड़ी सब धनमें कहावे ॥
हीरा हाटक मानिक मोती, आदि रतन जरिजावें।
प्राण समानहिं बिद्या होवे, आपन मुखनि सुनावे ॥
सुनो सुनो मन भावे ॥ १ ॥
गेह देह अरु भ्राता भाई, कोऊ काम न आवे ॥
अस जस बिद्या सुकाम आवे, देवे मान बढ़ावे ॥
सन्देह सकल जावे ॥ २ ॥
सुख आनन्द सब समटे आवें, नाम सुनाम बढ़ावे।
दुख दारिद्र सब भागत जावें, यदि बिद्या भलआवे ॥
अस धन जानन पावे ॥ ३ ॥
जबलगि जल गंग यमुना धारा, रबि शशि प्रकाश पावें।
तबलगि नाम सुछाय रहतहै, यदि बिद्या भलआवे ॥
अस धन तन मन भावे ॥ ४ ॥

(५)

उत्तम चाल ॥

पद रागनी—मध्यमानताल ॥

चाल चलोरे उत्तम चाल ॥
उत्तम चाल सुचाल कहावे, खोटी चाल कुचाल ।
लंद फंद मारि गलोज छांडो, छांडो जग जंजाल ॥ १ ॥
सनेह सप्रीति सबसों बरतो, समुझि देख अरुभाल ।
नाम सुबड़ो सुनाम उठाओ, करो बड़ी सुकपाल ॥ २ ॥
उत्तमचालहिं ईश्वर मोहत, भली जगत महं चाल ।
कुचाल सोंसब घृणा करतहैं, चालन चलो कुचाल ॥

(६)

दया ॥

राग बिहाग—तालमध्यमान ॥

मनमें दाया धारो लोग ॥ ।
पशु पची नर कीट पतंग पर, करो कृपा करजोग ।
दया कृपासु उपकार होवे, होवे फलकर भोग ॥ १ ॥
दाया देवो दाया लेवो, दाया कर भल जोग ।
करुणा प्रीति नेह आदिक सब, उपजतहैं सब भोग ॥ २ ॥

(७)

इतिहास सिखाना ॥

रागनी भैरवी — तालमध्यमान ॥

इतिहास राशि राजकी अपकाज नाश कारी ॥
पठन भांति जनि पढ़ावहो, सारार्थ भारी ।
कथा कहानि समान करो, दे उपमा सारी ॥ १ ॥
हरएक विषय बखानतें, लेवो अर्थ ढारी ।
बड़ बड़ रण तिथि वारसन, कर ऊपर धारो ॥ २ ॥

इमि बड़ बड़ वृत्तांत सुजन , राजा रण कारी ।
छान छान सब कहो भले , संक्षेप महं सारी ॥ ३ ॥
पुनि पूछो सब बालक तिमि , तुम बखान डारी ।
देहिं उतर तब बालक सब , अति सोच बिचारी ॥ ४ ॥
बहुत सहज है रीति यही, दिन प्रति कर डारी ।
सब बखान पिछलो पूछो, समुझि बूझि भारी ॥ ५ ॥

(८)

इतिहास में मुख्यबातें

ख्याल ॥

रागनी सोहनी, ताल आड़ा ठेका ॥

इतिहास महीं यही सार सिखाओ ॥
भूपति कर सम्बन्ध प्रथम भूपति सन ,
राज मुख मुख सुबात बताओ ।
मुख मुख वृत्तान्त समेत स्थानकाल ,
मुख मुख युद्ध बखान कराओ ॥ १ ॥
मुख मुख सुलोग ताके सुराज महंजो ,
सनाम सचाल कार सुनाओ ।
जीवन मरन राज कर मुख मुख सन सब ,
राज भल कार बार बुझाओ ॥ २ ॥
रण बखान महं तिथि कारण भागी सब ,
स्थान भूप नाम समझाओ ।
इत उतसों सब मुख मुख वर्णन जोहो ,
पुनि युद्ध कर फलहीं सुनाओ ॥ ३ ॥

(९)

पाठकों का धर्म

होली मध्यमान ताल

पाठक जनकी असि मरियादा ॥

पठन लिखन अरु हिसाब किताब , अरु ऊपरि अपवादा ।
केवल इतनो कहनो नाहीं, समझत होत निषादा ॥
नहिं असि मरियादा ॥ १ ॥
नीति शास्त्र कर आदिक बातें , चुनि चुनि कर अनुवादा ।
भल भल शील सुचाल सिखाओ , जातें बालक सादा ॥
होवें मनुजादा ॥ २ ॥

(१०)

गायन विद्याका वर्णन ॥

होली , ताल मध्यमान ॥

सुनोरे सुनोरे गान गवाई । गीत सुरीति बताई ॥
भैरव मालकौंस अरु हिंडोल , मेघ और श्री आई ।
दीपक मिलि षट राग कहावें , भांति भांति मनभाई ॥१ ॥
भैरों सुरसुनि कोल्हू धावे , पाथर कौंस पघलाई ।
हिंडोल गावत हिंडोल झूले , मेघ सुघन बरसाई ॥ २ ॥
श्री राग कर सुर ध्वनि सुनिके , सूखा बृच्छ हराई ।
सुनत बोलन दीपक रागके , दीप दीप बर जाई ॥ ३ ॥
प्रति इक राग कर पृथक नारी , रागतें एक सुहाई ।
पुनि इनकर उपरागनि बहुहैं, भिन भिन ताल सुराई ॥ ४॥
भैरवी बंगाली मधु माध्वी , सिंधवि वैरारि आई ।
भैरव राग रागनी आहीं , बिरहिन नारि कहाई ॥ ५ ॥
खम्बावति को भव्व अरु गौरी , गुन कलि टोड़ी भाई ।
माल कौंस कर रागनी होवें , गावत गाय न जाई ॥ ६ ॥
देसाख बिलावल पट मंजरी, राम कली ललिताई ।
ये रागनि हिंडोल कर आहीं , गावत मन न थिराई ॥ ७ ॥
देसी कान्हड़ा कामिदा , केदारा नट आई ।
दीपक राग रागनी हैं ये , गावत प्रेम डुबाई ॥ ८ ॥
धना माल श्री आसा वारी , मारू बसन्त भाई ।

श्री रागकी रागनी बोलें , बोलत मन तरसाई ॥ ९ ॥
मलार गूजरि अरु भूपाली , देशी अरु काराई ।
ये सब रागनि मेघ रागकीं , बियोगनि नारि कहाईं ॥ १० ॥
या बिधि अगणित रागनि जानों , नाना भांति सुहाई ।
ते सब उपरागनीं होइके , जय श्री आदि कहाईं ॥ ११ ॥

(११)

सुरोंका वर्णन ॥

रागनी सुहब , ताल एक ताला ॥

संगति सुरनकी सान सुहाई ॥
सप्त सुरनकी गिनती ऐसी , षरज ऋषभ गन्धराई ।
मध्यम पंचम धैवत निषाद , सरगम पधनि सुहाई ॥ १ ॥
ये सातों सुर प्रकृत कहावें , चार विकृत लगाई ।
उतरी गंधार धैवत निषाद , ऋषभ मध्यम कड़ाई ॥ २ ॥
सुर ऊंचो आरोह कहावे , अवरोह ता उतराई ।
ऊंचो नीचो सम सप्तक शत , तीन ग्राम कहलाई ॥ ३ ॥
उदारा मुदारा तारा नामा, तीन ग्राम करभाई ।
मुखसें गावें गीत कहावे, यंत्रसें गत कहजाई ॥ ४ ॥

(१२)

गाना बजाना ॥

देश रागनी , ताल जलद तिताला ॥

राग सिखाओ रागनि राग ॥
षट्न राग सुन्दर सुहावने , पांच नारि भर जाग ।
भिन भिन गुणबहु भिन भिन सुरुप , भांति भांति कर भोग॥१ ॥
तीताला धुरपद आदिक सब , तालबिबिध सब राग ।
सप्तक मूर्छा ग्राम भेदसब , बताहु जानि सजाग ॥ २ ॥
राग मुख अरु ठाठा तोड़ा , उपज उपज सब साग ।
आरोही अवरोह गीत गत , मीड़ छूट बहुभाग ॥ ३ ॥

(१३)

गाना बजाना ॥

दादरा ताल उसीका ॥

गाना बजाना क्या सुखदाई, क्या मन भाई ॥
आनन्द दायक सब जन भायक, श्रमफल श्रम फलदाई ।
थकन उतारे देवन हारे, तान ताल सुरभाई ॥ १ ॥
कल को बेकल बेकल को कल, देवे देवेभाई ।
सुर नर मुनि पशु सब मोहत हैं, गाना सुन करगाई ॥ २ ॥

(१४)

नाम ॥

दादारा ताल उसीका ॥

छाप बड़ी है जगमें नामकी ॥
छापबड़ी है छाप भलीहै, सबबिधि बहुत कामकी ।
प्रशंसा यश कीरति बिस्तारे, बहु गुण सुख मन धामकी ॥ १ ॥
कंह लगि बरनों गुण याके मैं, अगणित लाभन हानकी ।
धन जन धन सबका विनशतहैं, छाप रहतहैनामकी ॥ २ ॥

(१५)

शालामें काले तख्ते का उपयोग ॥

रागनी बसन्त—मध्यमान ताल ॥

कृष्ण पाठ उपयोग करोरे ॥
चापा कारी कक्षा संमुख, पाठ एसो धरोरे ।
धरि चिपद परवा भीतमारी, पोंछि निर्मल करोरे ॥
मनु निरमल नभओरे ॥ १ ॥
गणित अंकमें गणितके प्रश्न, भिन्न दशमलव ओरे ।
त्रैराशिक अरु पंचराशी, मूल घात सबओरे ॥
रीति समेत लिखोरे ॥ २ ॥
बीज गणित अरु रेख गणितमें, समी करण साध्योरे ॥

चित्रोण मिति अरु ज्योतिष गणित, तुल्य तुल्य प्रश्नोरे ॥
भानु शशिहि सो बोरे ॥ ३ ॥
इतिहास के बड़े बड़े युद्ध , समान सतिथि लिखोरे ।
देवो बड़ बड़ जनन को नाम , भल भल बात बतोरे ॥
बड़े बखान करोरे ॥ ४ ॥
भूमि गोलमें नक्शा खींचो, हिन्द एशिया ओरे ।
आमेरिका ओर आफ्रिका, यूरोप अंगल कोरे ॥
गिरिनदि नगरसबोरे ॥ ५ ॥
व्याकरण में व्याख्या करनी, पदपद भिन्न असोरे ।
पठन पोथि महंअरथ बताओ,शब्दशब्द अलगोरे ॥
अस उपयोग करोरे ॥ ६ ॥
जैसे बसुला बढ़ई हेतू, लेखनि लेखक कोरे ।
जिमि हथोड़ो लोहार लागी, दरजी सूई सोरे ॥
तुमहीं पाठ भयोरे ॥ ७ ॥
इत उत नाहिं फेंको पाठहों,शाला कोनोमोरे ।
सदा समुख राखो लरिकनके, पोंछनि चाकलगोरे ॥
विविध विषयसमझोरे ॥ ८ ॥
भल भल पाठक शालामांहीं, सदा कृष्ण पठकोरे ।
सकल विषय मह योग करत हैं, तनमन चितहित सोरे ॥
थोरश्रम सुनाम भयोरे ॥९ ॥

(१६)

॥ सम कालो पढ़ना ॥

काफी रागनी—ताल मध्यमान

हे पाठक लोगो, पढ़ाओ भला सम काली पढ़ना ॥
जहां कहीं पर थोरे बालक हैं, तहां तो यह रीति रखना
एक एक बलक पढ़ते जावें, ठहरे ठहरे शब्द कहना ॥ १ ॥
जहां जहां पर बालक बहुते हैं, चापाकार खड़े करना ।

इक इक शब्द पाठक बोलजावें, बालकइकदम कहउठना ॥ २ ॥
ऐसन पाठन तें देखो समझो, सब बालक का हो पढ़ना ।
वाक्यहोने पर पाठक बोले, पुनिसब बालक कह उठना ॥ ३ ॥
एक बात स्मरण राखो मनमें, जब होय रहो है पढ़ना ।
अस अनुमानहिं बालपाठ बोलें, शब्दमहान नहींरहना ॥ ४ ॥
देखो देखो तो समझो समझो, एक बालक केर पढ़ना ।
दो बारहो इक पाठक संग, एक बारहि साथ अपना ॥ ५ ॥
पुनि उच्चारणसुधरिहै सबन को, पाठक, सम उत्तम पढ़ाना ।
सबबालक करध्यान इकलागे, बहुत समयकाहो बचना ॥६॥

(१७)

॥ समय विभाग महाराजाधिराज ॥

काफी रागनी—ताल मध्यमान

हे समय विभाजा, महाराजाधिराजा ॥
इन्सपेक्टर आवें जबशाला में, तिनकर है यह काजा ।
समय विभागहिं देखें परखें, है कि गयोकहुं भाजा ॥ १ ॥
यदिटंगो है संमुख कक्षा, (जानु) शाल भलि साजा ।
कहूं परो है इत उतमैलो, तोबिगड़ो सब काजा ॥ २ ॥
पाठक लोग समुझि केदेखो, ताबिन होत अकाजा ।
बहुत विषयहो जावें बिसरित, निष्फल समय बिभाजा ॥३॥
आपनकहं अस सब बातन कहं, नौकर चाकर साजा ।
हितचित जानो समय विभागहिं, महाराजअधिराजा ॥ ४ ॥
समय विभाग के वर्णित तुल्य, जो न करे निजकाजा ।
सो पाठक निज काज न जाने, मासिक पा अपकाजा ॥ ५ ॥
उत्तम शाला उत्तम पाठक, उत्तम पुस्तक भ्राजा ।
उत्तम कुरसी उत्तममेजा, विभाग बिन अप काजा ॥ ६ ॥
जस जस वर्णित पाठक लोगो, तस तस समय बिभाजा ।
ता उपयोगी उचित पूर्वक, करो करो निज काजा ॥ ७ ॥

(१८)

शासन ताड़न ॥

झिंझोटी रागनी—ताल ठुमरी

समुझि समुझिके शासन ताड़न, समुझिसमुझिके शासन ताड़न,
करो करो तुम पाठक लोगा ॥
कभू कभू अस अवसर आवे, शासन ताड़न कर उपयोगा ।
दण्ड दिये बिनबनतीनाहीं, आय परतहे कठिनसंयोगा ॥१॥
जो पाठक बहु शासन करहीं, काजन जाने होत अयोगा ।
पाठकपन त्याग सो देवे, लेवे मूरखता कर रोगा ॥ २ ॥
धमकी घुड़की आदिक शासन, जबहारे सो सब उपयोगा ।
हारि मानमन मारिजानितब,कर तनको शासन अभिजोगा॥३ ॥
तेहू महं ऐसो जनि मारो, हानि आदिहैं जामें रोगा ।
शासन होवे दुःख न व्यापे, होवे नाहीं हानिज सोगा ॥४ ॥
कोप बेर महं जनिमारो कभु, जामेंहो कछुविपति संयोगा ।
नियम अनुसार शासन करहो, जामें काम चले उपयोगा ५ ॥

(१९)

बेत-शासन ॥

खयाल ॥

रागनी सिंधु , ताल मध्यमान ।

लचीले बेतसे मारो , पाठक लोगो मारो ॥
बेत होवे लचीलो पतरो , केवल यह करतारो ।
पर काज महं न लावो ताकहं, यह शासन रखवारो ॥ १ ॥
अवसर शासन पाके लेवो, कभुनहिं ताकहं टारो ।
नतु बिगरतहे निज स्वभावा, रहो रहो मन मारो ॥ २ ॥
तनके कोऊ भाग न पीटो, मात्र हथेली मारो ।
पुनि परसों शासन न दिवाओ, मारो निज हथियारो ॥ ३ ॥
असावधानी शासन करहो, लगातार जनि मारो ।

पाठक कर निरादर होवे, बालक हो कुटिलारो ॥ ४ ॥
इतनो पर यदि बाल न माने, देवो ताहि निकारो।
तोहु न माने तबतो करु यह, देवो गृह पठवारो ॥ ५ ॥
जहंलो बने तहं लगि रोको, दैहिक कर कर मारो।
बालक समझें हम शासितहैं, तो इमि भांति सुधारो ॥ ६ ॥

(२०)

अङ्क गणितकी शिक्षा ॥

॥ काफ़ी रागनी—ताल मध्यमान ॥

गणित अङ्क इमि भांति करो ॥

फल दायक हैं विषय अनेकन, तिनमहं इनहिं धरो।
मनी रंजनी अरु बुध बरधनी, चपलता मन भरो ॥ १ ॥
गिनती दसलगि उत्तम सिखाओ, शतलगि पुर करो।
कौड़ी कङ्करसें जोड़ बाकी, रीति सहितनिकरो ॥ २ ॥
गुणा भाग साधारण मिश्रित, पाटीपर लिखरो।
प्रति प्रति प्रश्न कृष्ण पाठ महं, निर्मल रीति धरो ॥ ३ ॥
त्रिपंच राशी भिन्न दशमलव, भांड प्रति भांड भरो।
मूल घात अनेकन रीतिके, कारे पाठ धरो ॥ ४ ॥
यदि नहिं तो कृष्ण पाठीमहं, बालक जाय धरो।
पूंछ पूंछ तब सब बालक प्रति, रीति समेत करो ॥ ५ ॥
कछु कछु प्रश्न देवो लरिकन कहं, जाय गृह महं करो।
प्रति प्रति दिवस दिखावें लाई, रीति सुरीति सरो ॥ ६ ॥
पाठक तुमहीं बिचारि लीजो, सदा ध्यान धरो।
यही बिषय है ऐसो हलको, अभ्यास अति करो ॥ ७ ॥

(२१)

बीज गणित शिक्षा ॥

रागनी भैरवी—ताल मध्यमान ॥

बीज गणित भणित सहज अमित अति प्यारे ॥

मान करन कोष्टक अति, भांति भांति धारे।
सङ्कलन व्यवकलन आदि, गुणा भाग कारे ॥ १ ॥
लघु महातम अपवर्त्य, समीकरण सारे।
वर्ग मूल घन घात सब, करणी सब धारे ॥ २ ॥
दो तीन बहु पदी तब, मिठी सगरे।
कृष्ण पाठ लिख लिख अरु, देवो गृहकारे ॥ ३ ॥
बार बार करन हेतु, अभ्यासहिं कारे।
जातें बालक होवें सब, तीक्ष्ण करनारे ॥ ४ ॥

(२२)

रेखा गणित ॥

होली—ताल मध्यमान ॥

गणित रेखा सुवेषा भईरे, सुवेषा भईरे ॥
धरि भाषा इक इक फोड़ फोड़, परस्परता भईरे।
ये सब लकड़ी फकड़ी जानो, कृष्ण पाठ लिख दईरे ॥ १ ॥
अवा ध्योपकरम और संबंध, हथियार आदि भईरे।
स्वयंसिद्ध परिभाषा रखरख, मनुकील मील अईरे ॥ २ ॥
सकल बुकनके साध्यन करि करि, अनेकन बस्तु भईरे।
भांति भांति बुमनमें गड़ाओ, भलचित समझ अईरे ॥ ३ ॥
इनसे काढ़ो अभ्यासी प्रश्न, भांति नवीन भईरे।
करो करो बुद्धि ज्ञान बाढ़े, बाढ़े मन चितईरे ॥ ४ ॥
लाभ लाभ फल काहों बरनों, मुखहिं आय भईरे।
जो जाने भल सोई जाने, अगणित लाभ ठईरे ॥ ५ ॥

(२३)

समय बिभाग का मान॥

रागनीपूर्वी—तालमध्यमान ॥

समय विभागहिं मानोहो मामा, शाला स्वामी मानरे ॥
जस जस लिखी जोजो करन कहं,समय पलटन अरु दानरे।

तसतसकरौसेसो विषयकहं, परिश्रमसहित हितअरुजानरे ॥१॥
एक विषयकहं जनि छाड़ोतुम, नियमितकाल अधिकानरे ।
बहते दूसर विषय रहतहैं, आवत जातहै हानिरे ॥ २ ॥
नियमित विषय विरुद्ध नहोओ, कोउहु अवसर आनरे ।
वही समयमहं वही विषयकरु, जैसोजोहै लिखानरे ॥ ३ ॥
समय विभागहिं राजा मानो, आज्ञा दायक मानरे ।
अपनहिं लरिकहिं चाकरजानो, सुआज्ञाकारी जानरे ॥ ४ ॥

(२४)

समय विभाग के फल ॥

ठुमरी—ताल ठुमरीका ॥

समय विभागा अस फलदाई ॥

समय बचावे ध्यान लगावे, होवत है सुखदाई ।
गड़ बड़ नाशे बाट चलावे, लरिकन तुम कहं भाई ॥ १ ॥
सकल विषयसब पूरण होवें, रीति बारि मन लाई ।
समय समय सब बिश्रामपावें, लरिकन पाठक भाई ॥ २ ॥
आश्चर्य दायक शाला बाढ़े, बाढ़ेलरिकन जाई ।
गुणबहु आवे बिद्या आवे, सहजाई चतुराई ॥ ३ ॥
कक्षा सीखें पाठक थोरे, होत काम सुगमाई ।
बहुत थोरे थोरा बहुतहो, बाढ़त फल बहुताई ॥ ४ ॥
जब इतनोहै तब तुममानो, काहेनहिं फलआई ।
अगणित लाभ सुपरिश्रम थोरो, करो करो मनलाई ॥ ५ ॥

(२५)

शाला—सामग्री ॥

रागनीभैरवी—तालचौताला ॥

शाला शुचि सामग्री सकल सब सोही ।
भिन्न भिन्न विषयन कहं भिन्न भिन्न होही ॥
पढ़न लिखन व्याकरण पठन पाठ पोही ।

व्याख्या चक्र पच पाठ पुस्तक पठ मोही ॥ १ ॥
हिसाब किताब पाटिमहं कृष्णा पाठसोही ।
क्वापि लिखन कागदमहं मेज़ बेंच होही ॥ २ ॥
भूगोलहि नकशा बहु देखन खींचोही ।
कृष्णा पाठमहिं खींचा निर्मल करसोही ॥ ३ ॥
कुरसी मेज़ सब निष्फल समय पाय ओही ।
कृष्णा पाठ बहुत फल प्रद होवे सब कोही ॥ ४ ॥
अपर वस्तु उचित बहुत अवसर सों ओही ।
अस्त्र शस्त्र चीज वस्तु भिन्न भिन्न मोही ॥ ५ ॥
शासन अरु ताड़न कहं बेत नियत होही ।
रीति सुपच बहुत लाग सुधरा हट सोही ॥ ६ ॥

(२६)

पढ़ना, अर्थ, और व्याकरणकी सामग्री ॥

ठुमरी—ताल उसीका ॥

पाठ पठन की सामग्री ऐसी ॥
कच्चा पहिली अक्षरावली, कागद लिखहे जैसी ।
धीरे धीरे संयुक्त अक्षर, चलन चाल चल वैसी ॥ १ ॥
लघु लघु शब्द बड़े बड़े शब्द, भरित पुस्तकहिं ऐसी ।
पुनि वाक्य बहु भिन्न प्रकारी, पच पोथी कर जैसी ॥ २ ॥
शब्द कोष अरुवर डिक्शनेरी, तकिताकी तस तैसी ।
व्याख्या लागी व्याख्या चक्र, निरखे परखे वैसी ॥ ३ ॥
व्याकरण व्याकरण शोधो, देखो भालो वैसी ।
गुरू इन्सपेक्टर परिपाटी, मानो नोटबुक तैसी ॥ ४ ॥
जस जस वर्णन पाठन वस्तुन, तस तस ताको तैसी ।
अस्त्र शस्त्र पुनि पाथर गोटा, सुप्रकारी बहु वैसी ॥ ५ ॥

(२७)

पठनशिक्षा ॥

रागनी सारंग परकी ठुमरी—ताल मध्यमान ॥

पाठ पठन बिधिभांति पढ़ाओ ॥

पाठ पठन कर रीत बहुतहैं, हौंकछु इक अवगावौं ।
मनं चितहित अतिचाव भावसों, क्रमक्रम तेह सिखावौं ॥ १॥
बार बार मनत।य लगाके, अक्षर ज्ञान चिन्हाओ ।
उलटि पुलटि पूंछो बहुभांती, समरूपी समझाओ ॥ २ ॥
पुनि वर्ण मिलान और बहुरंगे, संयुक्त रूप सिखाओ ।
सुगम शब्द साधारण सगरे, अभ्यासार्थ लिखाओ ॥ ३ ॥
धीरे धीरे लघु लघु वाक्य, हिज्जे करि करि कहाओ ।
शब्द शब्द पर ठहर ठहरके, पढ़न पढ़न पढ़वावौ ॥ ४ ॥
बड़ बड़ पाठ पढ़े या भांती, मनु समझतहैं वाओ ।
स्पष्ट धीर मनु बोलरहेहैं, भांति भांति पढ़वाओ ॥ ५ ॥
आपन रीति समानहिं पढ़िके, ठहर चिन्ह समझाओ ।
जातें बालक पाठन लागे, बिन अन्तर स्वभावो ॥ ६ ॥

(२८)

पढ़नेके गुण ॥

रागनी जंगला—ताल मध्यमान ।

पढ़नेकेहैं गुणभारी, भलापढ़ने के हैं गुणभारी ॥
प्रथमहै उच्चारण की शुद्धता, भल भल भलता भारी ।
यह होवे स्वरन स्पष्टता, पुनि व्यञ्जनहै सारी ॥ ॥ १ ॥
दूसरहै उच्चारण स्पष्टता, जोहै बिबिध प्रकारी ।
शब्द होवे वा बचन होवे, स्पष्ट कर्ण मझारी ॥ २ ॥
तीसर ठहर स्थान शुद्धता, शब्द वाक्य मझारी ।
प्रथम दूसर रीति उचारके अभ्यासो यह डारी ॥ ३ ॥

चौथे शब्द भटकन कहावे, उचित स्थान महंभारी ।
शब्द वा शब्द खण्डन होवे, समुझि समुझि सबसारी ४ ॥
पञ्चम पढ़न अनुमान नामा, तासुरीति अति भारी ।
जाते सहजी श्रोता समझें, अस सुरीति पढ़ डारी ॥ ५ ॥
छठी शुद्धता उतरन चढनकी, है हित चित अधिकारी ।
सो अनुमान ऐसो पढनको, पोथि पढ़े याठाढी ॥ ६ ॥
सप्तम पढन कर लय कहावे, सो सुभाव सहजारी ।
अर्थ लेले पढन सो होवे, नहिं हां हूं अनुसारी ॥ ७ ॥
अष्टम पढन समता कहावे, इहतेही लय भारी ।
श्रोता को मन खींच सुलेवे, मनु सुर ध्वनि मन हारी ॥ ८ ॥
नवम पठन कण्ठ अस होवे, गानन दरसे डारी ।
तदपि कण्ठ ऐसो सुन आवे, जैसो निर्मलझारी ॥ ९ ॥

(२६)

व्याकरण शिक्षा ॥

रागनी खमाच—ताल मध्यमान ॥

व्याकरण सु सिखाओ ऐसो, भाषा ज्ञान होजाय जैसो ॥
व्याकरण अपहरण अशुद्धन, करन धरन शुद्धन कैसो ।
मनु विद्या नभ तारागण महं, निर्मल इन्दुहै जैसो ॥ १ ॥
लघु लघु वाक्यन व्याख्या करन, कर्त्ता क्रिया दो वैसो ।
गुण आदिक बाढ़न कारण पुनि, शब्दन भेदन सबतैसो ॥ २ ॥
बहुबिधि इतनो अभ्यास करि तब, वचन कारक लिङ्गवैसो ।
गुण वाचक अरुक्रिया विशेषण, उदाहरण देकरि जैसो ॥ ३ ॥
बहुबिधि ज्ञान जान पहिचानहिं, रहो सहो बरतो जैसो ।
पदच्छेदन व्याख्याकरन पुनि, भांति भांति बगरन तैसो ॥ ४ ॥

(३०)

व्याकरण शिक्षा।

ठुमरी—तालमध्यमान॥

आभरण भाषा कर व्याकरण सिखाओरे॥
प्रथमबाल जिमि पढ़न लगतहैं, लघु लघु वाक्य बताओरे।
का कहतहैं काको सम्बन्ध, उद्देश विधेय बुझाओरे॥१॥
दूसरि कक्षाकर अभ्यास यह, क्रिया संज्ञा कहाओरे।
उदाहरण परि भाषा देदे, आदिक भेद बुझाओरे॥२॥
पुनि गुण बाचक अरु सर्वनाम, यौगिक अव्यय जनाओरे।
शब्दभेद आदिक वर्णित सब, तीसरि कक्षहिं बताओरे॥३॥
चतुर्थी पंचमी षष्ठी कक्षहिं, व्याख्या चक्र पढ़ाओरे।
पदच्छेद अरुपरि व्याख्या सब, क्रम क्रमक्रमहिं सिखाओरे॥४॥
यह जितनो सब ऊपर वर्णित, कृष्णपाठ लिखवाओ रे।
बुध मानी चतुरता समेतहिं, समुझि समुझि दिखलाओरे॥५॥

(३१)

भूगोल शिक्षा॥

रागनीझंझोटी—ताल मध्यमान॥

जगजगातजगभूगोललीलकहं, समुझि सुरीतिसुनीतिसिखाओ॥
बिना पुस्तक कर पहिलेपहिले, जाज़िलामंही रहन रहाओ।
ताकोसीमा नदी पहाड़ी, दिशा आदिकर ज्ञान बताओ॥१॥
यह सब खींचो कृष्ण पाठ मंह, बहुत भांति निमिगाइ बताओ।
अन्तर ग्राम एक दूसर कर, परि भाषा आदिक समझाओ॥२॥
पुनि नगरग्रामआदिकबारिक, बिधिबिधि नकशामांहिबताओ॥
माल टाल सब देशन देशन, नगर नगरलव बिदितकहाओ॥३॥
गरमी सरदी बताय पानी, आदिक सात्विक मनहिं भराओ।
धीरे धीरे अस हो जावे, मानो जगतन सकल नचाओ॥४॥
भूगोल पढ़ि पढ़ि तबहो जबहीं, नकशा संमुख सदालगाओ।

प्रतिप्रतिग्राम नगर आदीको, तामंहलेकिचितहिं बैठाओ ॥ ५ ॥
नक्शा पुस्तक सबढिगराखें, कृष्ण पाठमंह सकल खिंचाओ ।
जसजस बर्णित सब दरसे तहं, निर्मल निर्मल सबहोआओ ॥६॥

(३२)

समय विभाग बनाना ॥

रागनी धनाश्री—ताल मध्यमान ॥

समय बिभागहिं समुझि बनाओ । अपन शालाकर साजसमाज,
सामुझि सोच चलाओ ॥
प्रथम सोचो शाला समय कहं, पुनि पाठक निरमाओ ।
पुनि बिचारो सकल विषयन कहं, प्रति कक्षा किमि आओ ॥१॥
अस अनुमानि लिखो सब संमुख, कोउन छूटि कहाओ ।
विधिवतसमयविषय कहंदेई, लिखिलिखि भल लटकाओ ॥ २॥
फलप्रद विषय प्रति दिवस आवें, लिखन पढन इस्लाओ ।
हिसाब किताब कापी लेखन, इनतें अभ्यास पाओ ॥ ३ ॥
यदि समय कहुं अड़चन होतहै, इक दिवस आड़ आओ ।
भूगोल इतिहास उलटि उलटि, विभाग सहं लिखवाओ ॥४॥
पाठक लरिकन आदिक पलटन, ऋतु पलटन बिचराओ ।
समुझि समुझि पलटो सुविभागहिं, नव नव नव निरमाओ ॥ ५॥

(३३)

भूगोल की सामग्री ॥

रागनी बसन्त—ताल मध्यमान ॥
लोल भूगोल की सामग्री ऐसी ॥
पहिले पहिले नक्शा चमकत, लघु लघु देशन वैसो ।
अस बस नगर भरित नहिंहोवें, होवें निर्मल तैसी ॥
नभ तारागण जैसी ॥ १॥
भूदरशन को गोला होवे, रंगित लिखित सब जैसी ।

गड़बड़ित सड़ बड़ित नाहिं होवे, भणित नगर सब वैसी ॥
षट प्रायद्वीप तैसी ॥ २ ॥
धीर धीर बड़ नकशा होवें, बड़ बड़ नगरन तैसी ।
सरिता सरगिरि भरित होवहीं, द्वीप आदिक जैसी ॥
लिखित भरित सब वैसी ॥ ३ ॥
भूरवि शशि अरु तारा हेतु, भिन्न भिन्न वस्तु वैसी ।
भिन्न प्रकारी कृत्रिम वस्तुन, राखो निर्मल तैसी ॥
अक्षांश आदिक जैसी ॥ ४ ॥
सर्वोत्कृष्ट इक वस्तु बताऊं, यदि पाठक निपुणैसी ।
कृष्णपाठ सब बिधि उपयोगी, लिख लिख लिखान जैसी ॥
जितने बांथेत ऐसी ॥ ५ ॥

(२४)

दफा बनाना ॥

॥ राग बसन्त बहार—ताल एक ताला ॥

पाठको दफा बन्दी करोरे। लाभ बहुत ही निकारि निमारि,
बहुत परिश्रम हरोरे ॥
जहं कहं बालक बहुत होतहैं, असम योग न धरोरे ।
यदि पाठक इक वाटू होवें, आकठिनता परोरे ॥ १ ॥
अस स्थान महं बन्दी बांधो, कक्षानाम धरोरे ।
बिधिवत एकी योगी बालक, समुझि समुझि सुकरोरे ॥ २ ॥
लघु समय में काम भू होवे, नहिं कछु जान परोरे ।
इक पाठक बहु कक्षा सिखावे , परिश्रम थोर धरोरे ॥ ३ ॥
उमंग अभ्यास आदिक बाढ़ें, अमणित लाभ भरोरे ।
जस योगी तस लेवो बालक, पक्षपात नहिं करोरे ॥ ४ ॥
पक्षपात तें होवत बड़ हानि, मनतें दूर करोरे ।
कक्षा योगी रख्यो बालकन, कक्षा होत सुधरोरे ॥ ५ ॥

(३५)

अर्थ समझना।

कहरवा ताल दादरा॥

टीका बनाना ऐसे बताओ॥

पठन पाठको पठन कराके, व्याकरण सुविवरण कहाओ।

सार संग्रह सों सार बुझाओ॥ १॥

उलटि पुलटि पदच्छेद करके,कठिन शब्दनके अर्थबताओ।

कठिन कठिन कृष्ण पाठ लिखाओ॥ २॥

उपसर्गप्रत्ययआदिक धातुन, कठिन शब्दनके आनिदिखाओ।

बालक मनमहं आय गड़ाओ॥ ३॥

जस जस वर्णन तस तस बर्त्तन, उदाहरण देदे समझाओ।

संमुख सरीसी बस्तु बताओ॥ ४॥

बस्तु नहिंहोवे यहकर लोको, कृष्णपाठ माहिं चित्र खिंचाओ।

साक्षात रूप रंग बनाओ॥ ५॥

नदी पहाड़ी घोड़ा हाथी, पाथर गेटाहो खिंचवाओ।

नहिं संमुख सब ला समझाओ॥ ६॥

ऊपर लिखित सकल भल करिके, पाठ सारार्थ पुनि समझाओ।

दूतीन बार पाछु बुझाओ॥ ७॥

(३६)

कंठाग्र करना॥

गज़ल॥

बहोत फ़ायदे हरबातमें, ज़ुबानी याद लातीहै।

ज़ुबानी यादसे तो लड़को, क्यामज़ा बतलाती है॥

आते बड़े बड़े ख़ियालात, दिलमें आदत लातीहै।

नमालूम कहां कहां कीतो, मुस्किलात समझाती है॥ १॥

जो कुछ याद करोतो लड़को, फ़ौरन याद दिलाती है।

यादभी रहता फ़ौरन रफ़े, ज़ुबान साफ़ कराती है॥ २॥

उमदा बढ़िया इबारत होय, अच्छी तरह सुधरातीहै ।
आता है वैसाही लिखना, बिन खटके समझाती है ॥ ३ ॥
लेकिन बरज़बानी के वक्त, सिर्फ़ ज़ुबानी आती है ।
मतलब लेले यादकरो तुम, तबतो मज़ा बताती है ॥ ४ ॥

(३७)

शालामें सदा जाना ॥

गज़ल ॥

अजी सब लड़को रोज़ बरोज़, मद्रसेको तो जातेहैं ।
रोज रोज़ हाज़र होनेसे, क्या क्या मज़ा आते हैं ॥
उस्ताद हमपर राज़ी रहते, सज़ा नहींतो पातेहैं ।
इल्म बराबर हासिल होता, अगरचे भूल जाते हैं ॥ १ ॥
जानेसे मा बाप वग़ैरा, सबतो खुश होजाते हैं ।
सब लड़कों पर वाहे वाही, हमेश दिलपर लाते हैं ॥ २ ॥
जानेसे पढ़ना आता है, इनाम हासिल लाते हैं ।
मुक़र्रर वक्त पर इल्म पाते, बग़ैर फ़र्कके पाते हैं ॥ ३ ॥
ग़ैर हाज़िर रहनेसे भला ,चपरासी ले आते हैं ।
उस्ताद लोग सज़ा देतेहैं, बेहयाई तो दिलाते हैं ॥ ४ ॥
न जाने रोज़ रोज़ मदरसा, हर्ज़ नुकसान उठाते हैं ।
सबक़ बराबर याद न होता, आफ़द सिरपर लातेहैं ॥ ५ ॥

(३८)

हिज्जे करना ॥

गज़ल ॥

लब्ज़ों के हिज्जे करना,उस्तादो, इस तरह बतादो ।
ताके इमले में ग़लती, नहिं होवे, इस तरह सिखादो ॥
ह्रस्व और दीर्घ स्वरोंको, व्यंजनसे, जोड़ सब करादो ।
दोनों तरहके स्वरों में, फ़र्क न हो, ऐसा समझा दो ॥ १ ॥
फिर स्वरहीन व्यंजनों का, जोड़ जोड़, तरहसे करादो ।

एक फिर आधी सूरती, व्यंजनोंका, फ़र्क़ ले समझादो ॥ २ ॥
और शपस व्यंजनोंका, तलफ़्फ़ुज़व,लिखना बतला दो ।
रोज़ रोज़ मुश्‌किल मुश्‌किल, लब्ज़ोंके, हिज्जे करादो॥ ३ ॥
ऐसे ऐसे लब्ज़ों को, उस काले, तख़्ते पर बुझादो ।
लड़के लोगों को अपनी, स्लेटोंपर, कई दफ़ा लिखादो ॥ ४ ॥

(३९)

खेलनेका स्थान ॥

लावनी ॥

चलोयार अब खेल मचेगा , खेल खेल का वक़्त हुआ ॥
पढ़ना लिखना अभी नहीं है , खुशी खुशी का वक़्त हुआ ॥
गेंद बल्ला गिल्ली डंडा , खो डूडू का खेल हुआ ।
धावक चूवा चंडू गोली , तरह तरह तैय्यार हुआ ॥ १ ॥
दौड़धूप फिर कूदफांद सब , करो खुशी से आज हुआ ।
फुरती सुरती ताक़त बाकत , ज़ोर बदनमें आज हुआ ॥ २ ॥
सो चलो चलो खेल जायमें , घंटे भर का बसर हुआ ।
दो एक घंटे खेल मचेगा , कुल वक्त नहिं खराब हुआ ॥ ३ ॥
दिलताज़ा दिलबहालहोगा , कय तरह का फ़ायदा हुआ ।
चलो चलो अब काम करेंगे , खेल हमारा ख़तमहुआ ॥ ४ ॥

(४०)

कसरत करना ॥

रागनी वसन्त—ताल मध्यमान ॥

कसरत उमग बढ़ावनहारी । ताको करहीं सब संसारी ॥
छोटे बड़े सब रोग नशावे । शरीर कर रखवारी ।
फुरती सुरती सबहीं लावे । आलस नाशन कारी ॥ १ ॥
शरीररोगी सबहि भोगी । हल चल कर पद भारी।
नियमित दौड़न कूदनकरहो । समय समय अनुहारी ॥ २ ॥
उपवन टहलन वतास भक्षन । विधिविधि खेलनवारी ।

करो करो सब जीवन हेतू। मनहिं संदेह टारी॥ ३॥
तीक्ष्णता अरु बुद्धि बढ़तहै। सकल दुःख कहं टारी।
सिर आदिक कर पीरा नाहीं। अगणित फल दातारी॥ ४॥

(४१)

कसरत करना॥

रागनी बसन्त—ताल मध्यमान॥

कसरत के गुण कहं लग गाऊं॥
ताप तिजारी अरु चौथारा। गरमी सरदी नाऊं॥
शिरदुख न अरु पेटहिं पीरा। आलस सुस्ती बाऊं॥
सकल ठनगन नसाऊं॥ १॥
तीक्ष्णता तीव्रता लावे। झेपन चंपन नसाऊं॥
फुरती सुरती बिबिध प्रकारी। मन तन दृढ़ता लाऊं॥
सब बिधि बहु फल दाऊं॥ २॥
तन दृढ़ता मन दृढ़ता होवे। होवत बुद्धि बढ़ाऊं॥
विद्या सिद्या शीघ्रहि आवे। समझत तब सब भाऊं॥
कठिन सहज हो काऊं॥ ३॥
अगणित लाभ अरु हानि नाहीं। कहं लग कहत बढ़ाऊं॥
करो करो कसरत सब लोगो। मनोरंजन चित लाऊं॥
जीवन बहु बढ़ जाऊं॥ ४॥

(४२)

खेलने का स्थान॥

रागनी बिलावल—ताल चौताला॥

हे लोगो खेलभू कस सुखदाई॥
आनन्द लागे मन महं भाके, हरषद मुद मन भाई।
किलकनि खेलनि हांसन नाचन, सब आवत हरसाई॥ १॥
तीन प्रकारी वायु चलत है, देत सुगन्ध फुलवाई।
रोगन नाशन मन बहु माड़न, हितचित खेलखिलाई॥ २॥

कसरत करन न बोलन टेरन , खेलन दौड़ धुपाई ।
कूदन फांदन गावन नाचन , हरष हरष मगराई ॥ ३ ॥
हिलिमिलि के सबखेलो खानो , रीति सुरीति सुहाई ।
अगणित फल प्रद भूमि खेलहै , निरोगता भल दाई ॥४ ॥

॥ (४३)

विद्या ॥-

पद्तोटक—ताल मध्यमान ॥

विद्याबर कौसनजातकही । कछुजो कहहो सबथोर सही ॥
नृपमान करी सुख ज्ञान धरी । बहुरूपभरी तम भारहरी ॥
मन भानु प्रकाश करी गगने । दुख दारुण आदिक आपहने ॥
भल भाइ समान रहे नगरे । जरजात तमीय भ्रमी सगरे ॥
सुखदेत मनो अम्र पूरणता । दुख काढ़त जात जनोहरता ॥
मणिहीरक माणिक आदिकजो । झकमारत हैं विद्याबरसों ॥
बहुपार अपार सुखी नरसो । जिहिआवतहैं विद्याबरजो ॥
सुनहो लहहो असदायकको । जगके जनकेमन भायकको ॥
बरनेकहंकोविद्यागुणको । जिहि पावत भागमती भ्रमको ॥

(४४)

॥ अफ़सरों के साथ बर्त्ताव ॥

॥ रागनीकान्हड़ा—ताल तिताला

पाठक लोगोअफसर माना । असअसकरो सहितसध्याना ॥
सादर साज्ञा सहित समाना । बोलो कामकरो हित जाना१ ॥
जो कछुकहसुकरोधुनिधारी । कठिनकाजयदिछोटोभारी २ ॥
खटपटसटहठकरिकभुनाहीं । तनमनचितसोंकामसुजाहीं ३ ॥
सनेहसप्रीति सनीतिशुभरीती । चलेकाज जसहोवेजीती ४ ॥
आपस नमन करनविधिभांती । होवेहैके अतिशुभजाती ५ ॥
हां इतनोहै देखतजानी । कोई अफसरहैंशठमदसानी ६ ॥
तिनसों बलनचले बड़हानी । परते पावहिं तुरतखुटानी ७ ॥

सारअंश यह निकरत लोगा । काज होत भल दै उपयोगा ॥ ८ ॥
झगरा फगरा होवे नाहीं । कुनाम कुकाम कबहुं न आहीं ॥ ६ ॥

(४५)

मातहतों के साथ बर्ताव ॥

रागनीकेदारा—ताल तिताला ॥

हे पाठक हे अफसर लोगा । मानो मातहतन इमि योगा ॥
सहित सनेह सप्रीति सरीती । बोलो बरतो सरतो जीती ॥ १ ॥
कोपबैर द्वेष मद त्यागो । काज लेहु भल विधि कर भागो ॥ २ ॥
हिलिमिलिके सबकाज चलावो । अफसरीबड़ी बहुनजनावो ॥ ३ ॥
यदिसबकहंनहिंनिजसमजानो । तौहूतिनकहंनीचनमानो ॥ ४ ॥
जो कारज हित चित सों होई । कोप बैरसों होवन सोई ॥ ५ ॥
सार अर्थमनमाहिं निकारी । काजकरो निज पौरुषभारी ॥ ६ ॥
मातहतनसोंमिलिहिलिभाई । जुरिमिलिके तबकाज सराई ॥ ७ ॥
सतपूछहु तोमीत समजानो । बरतोसरतो बहु मनमानी ॥ ८ ॥
अधिकता दिखावहु कभुनाहीं । जातेकाज अकाजत आहीं ॥ ६ ॥
मसकालागन चाहो काहीं । यहंसुभाव बहुअधम कहाहीं ॥ १० ॥

(४६)

उत्तम व्याख्या ॥

चौपाई—ताल मध्यमान ॥

उत्तम उत्तम व्याख्या केरा । भल भल लक्षण हेरन फेरा ॥
उत्तम व्याख्या पद के हेतू । समुझि सुसोधो साधन सेतू ॥ १ ॥
निर्णीत भणित रीति अतिप्यारी । धरो धरो सुन्दर लघुवारी ॥
कर्त्ता क्रिया प्रथम निकारी । पुनि बांधो पदच्छेदन भारी ॥ २ ॥
शब्द भेदहिं सब लरिका बोलैं । बार बार न पूछ मति डोलैं ॥
जोकछु कहन लगें तामाहीं । लरिका कहैं सहाय नचाहीं ॥ ३ ॥
यदि पाठक कछु अवसिक जाने । बीच पूछ कर लोके माने ॥
सदा सदा राखो मन माहीं । यासब कृष्ण पाठ के नाहीं ॥ ४ ॥

बिधिबिधि लिखके कह तामाहीं । जाते अभ्यास छूट न जाहीं ।
पुनि सबरीति व्याकरण केरी । बार बार पूछो मन हेरी ॥ ५ ॥

(४७)

पुस्तकालय ॥

राग मेघ—ताल झंपताल ॥

पुस्तकालय सब राखो भल इमि ॥

पुस्तक गृहकह शोधलगाओ । फलद फलद पोथीमंगवाओ ॥ १ ॥
बालक पाठक परजन कोऊ । बिबिधि कत्ती पोथी भलहोऊ ॥ २ ॥
जो चाहें सो लेवें जाही । जाते उमंग बढ़े मन माहीं ॥ ३ ॥
भलभल नियम नभीति लगाओ । जातेपुस्तक रहन गवाओ ॥ ४ ॥
रीति रीति जमाइ के राखो । मानो पोथी आपहिं भाखो ॥ ५ ॥
मलिनी कोऊ होन न पावे । कीट पतंग प्रवेशन जावें ॥ ६ ॥
रजिस्टर इक राखो इह लागी । पुस्तक गाहक नाम सबांगी ॥ ७ ॥
नियम अनुसार गाहक लेवें । रीति अभंग सो नकर देवें ॥ ८ ॥
पुस्तक पर लिखि निर्मल नामा । जातेकाम न होय अकामा ॥ ९ ॥

(४८)

मा बापोंकी और बड़ोंकी आज्ञा ॥

रागनी ललित—ताल तिलाना ॥

जनदन की आज्ञा मानो , बड़नबड़न की बिधि जानो ॥
मात पिता की और बड़नकी , बड़न नात जानोना ।
सादर आदर तिन सन भाषो , बुधन विरोध करोना ॥ १ ॥
लघु भगिनी भ्राता आदिक सों , सनेह अति बोलोना ।
मारो तोड़ो झगड़ो नाहीं , बैरन कभु बांधोना ॥ २ ॥
छोट कहं भल उपदेश देवो , बड़ेन सों लेवोना ।
आपन पर कहं काज सुभावें , रीति सुनीति करोना ॥ ३ ॥
तुम्हरो हित हैं ते हितकारी , सब विधि ता परखोना ।

भलो भलोही सब विधि होवे, यामें भेद लहोना ॥ ४ ॥

(४९)

व्याख्या ॥

कहरवा—ताल दादरा ॥

व्याख्या मोरे लोगो ऐसो करोरे ॥

शब्द भेदन सकलन रीतन, बारहिं बार पहिचान ।
उदाहरण दे दे समझाओ, जाते छूटे न ज्ञान ॥ १ ॥
संज्ञा क्रिया आदिक बोलो, पूछो भेद न नाम ।
बचनन कारक आदि गड़ाओ, पूरो व्याख्या काम ॥ २ ॥
सब ऊपर यह बातहिं मानो, पद छेदन कर प्रमाण ।
पदच्छेद सब पहले बताओ, पुनि व्याख्याकर जान ॥ ३ ॥
इहते व्याकरण प्रगट होवे, कठिन संदेह सब भाग ।
जुगत उगत सब भांति सिखाओ, जामें राग न फाग ॥ ४ ॥

(५०)

विजिटरों को मानना ॥

रागनी आसावारी—ताल तिताला ॥

हे विज़िटर जनको अस मान करोना ॥

जब आवें शाला के भीतर, पाठक बाल उठोना ।
यथोचित सादर नमन करके, आज्ञा पा बैठोना ॥ १ ॥
जोलों नहिं पूछें ते तुमसों, तोलों नहिं बोलोना ।
समुझि समुझि के उत्तर देओ, खेद नहीं पहुंचोना ॥ २ ॥
ठाढ़े सादर बोलो चालो, बड़ बड़ नाहिं करोना ।
जस जस पूछे मांगे ते सब, तस तस कह देवोना ॥ ३ ॥
देख दाख अरु कह सुन करके, जबते चलन धरोना ।
पाठक बालक उठ उठ सादर, पुनि शुभ गमन करोना ॥ ४ ॥

(५१)

गुरू को मानना ॥

रागनी ईमन—ताल तिताला ॥

गुरू जीको सुनमन करोना । जनक जननि सों भल तर हैं
सो, ईश्वर तुल्य धरोना ॥
शाला समय गेहते निकसो , स्वच्छ बस्त्र पहिरोना ।
बाटमें झगड़ो न काहू सों , पोथी कर्राहिं धरोना ॥ १ ॥
शाला भीतर आवो जबहीं , सादर गुरूहिं नमोना ॥
निज स्थान महं बैठो चाप चुप , करमहं पोथि धरोना ॥ २ ॥
समय बिभागहिं जैसो लिखोहै ; तिमितिमि काज करोना ।
गुरू सिखावे तुम सीखो सब , तन मन चित वारोना ॥ ३ ॥
पठन समय जनि बात करोतुम, हितचित सबकसुनोना ।
जनि इत उत देखो भालो तब , जब जब होत पठोना ॥ ४ ॥
हठ वश जनि पावो बहु शासन , मननहिं खेद करोना ।
अनुचित बात कोई गुरूसों , नाहीं कबहुं कहोना ॥ ५ ॥
बचन अरु काज जनि करहो अस, जाहि गुरू रिसहोना !
समुझि सोचके उत्तर देवो , चाल सुचाल चलोना ॥ ६ ॥
यदि अनुचित कोउ बात होवे , क्षमा मांगि रहोना ।
कहि के लिखिके कैसो करिके , जो अपराध टरोना ॥ ७ ॥
शाला समय जान जब होवे , सादर नमन करोना ।
सूधे सूधे गृह कहं जावो , पथ महं जनि झगरोना ॥ ८ ॥

(५२)

छे रिपु ॥

रागनी झंझोटी—ताल मध्यमान ॥

काम क्रोध मद मत्सर मोहा, लोभ सुमिलि षटबैरि कहावें ॥
सत्य शीलता सनेह सुनीती ,दया मया करुणा सुभगावें ।
चोरी चारी गारी बारी , हत्या मत्या सगरों लावें ॥ १ ॥

अगणित हानिसानि होवत है, यदि इनके बशमें आजावें ।
त्यागत अगणित फलमिल जावें, उत्तमनरजग सोयकहावें ॥२॥

(५३)

इबारत लिखना ॥

चुटकला—ताल दादरा ॥

पद रचना होवे अस भांती ॥
व्याकर्ण शुद्धता भाषा बन्धता, योग्य शब्द कर जाती ।
समुझि समुझि के विषय समाना, भाषा सुन्दर आती ॥ १ ॥
शुद्धता सुन्दरता सुगमता, बोलो लरिकन साथी ।
जाते तस बोलें तस लिखहीं, मन भावो मन राती ॥ २ ॥
गृह लिखन कहं अस विषय देवो, जो जातें बहु भांती ।
यदि कठिन तु समझावो ताही, जा भांति लिखीजाती ॥ ३ ॥
विविध विषय वा लिखित सूक्ष्म, उल्था पाति चपाती ।
देदेवो समुझावो बहु बिधि, नाना अगणित जाती ॥ ४ ॥
बचन अशुद्धता बोल बतावो, सहित रीतिके साथी ।
सुधारो बतावो मन हितसों, लिखित हो कोउ बाती ॥ ५ ॥
शुद्ध लिखन लिखन पढ़न सब, कविता कर समझाती ।
भांति भांति की रीति बहुत हैं, है रचना पद साथी ॥ ६ ॥

(५४)

इबारत लिखना ॥

कजरिया—ताल दादरा ॥

चाहे गद्य की चाहे पद्य की, भल भल पद रचना, असआवे ॥
पढ़ो पढ़ो दक्ष ग्रन्थन कर्त्ता, समुझि सोचिके जानि जनावे ।
भाषा सुन्दरता पद रचना, विविध भांति सों ता समझावे ॥ १ ॥
पुनि मत कंठन पठन अभ्यासी, ध्यान ज्ञान मन महं धरावे ।
बार बार भल कोषहिं देखो, समुझि बिन आगे न बढ़ावे ॥ २ ॥
उल्था पुल्था उलटो पुलटो, झरोझरो शुध रीति कहावे ।

बाक् पटुता वारीहिं मानो, बार बार निज लिखन बढ़ावे ॥ ३ ॥
साधारण रचना बहु सुगमी, उत्तम भली सुभली कहावे ॥ ४ ॥
लिखो लिखो पद लिखन न त्यागी, जाते आवे आवे आवे ॥ ४ ॥

(५५)

पदच्छेद करना ॥

रागनी पूरबी—ताल तिताला ॥

पदच्छेदन वाक्यन के, करहो या भांती ॥
शब्द भेदन बहु विधि बतायके, करि पहिचान जनाती ।
सार संग्रह सार निकारिके, भांति भांति समझाती ॥ १ ॥
कर्त्ता क्रिया यदि कर्म्म निकारी, बार बार सब भांती ।
प्रति गुणहिं हेर फेर बताओ, गुण बाचक सब जाती ॥ २ ॥
कर्त्ता क्रिया के नाम चलित हैं, उद्देश विधेय भांती ।
उद्देश वर्धक और विधेय, वर्धक होत कहाती ॥ ३ ॥
उद्देश विधेय बढ़ावन रीती, बार बार समझाती ।
यह सब कृष्ण पीठ महँ लिखिके, करो करो मनराती ॥ ४ ॥
उभयान्वयी कोष्ठक में हो, मनो नहीं गण जाती ।
बुधमानी चतुराई से हो, सिखाव हो या भांती ॥ ५ ॥

(५६)

रजिस्टर ॥

रागनी टोड़ी—ताल मध्यमान ॥

रजिस्टर राखो पाठक लोग ॥
हाज़िर दाख़िल ख़ारिज करो, लिखो करो उपयोग ।
समन सध्यान खींचिके लिखो, निर्मल सुन्दर जोग ॥ १ ॥
मासिक वारी आदिक नकशा, करो करो सब लोग ।
अगणित भणित फलित बहुतहैं, इन रजिस्टर उपयोग ॥२॥
विज़िटर बुक कमिटी बुक आदिक, सरक्यलर प्रयोग ।
फीस आदिकर पाति चपाती, सामग्री हि उपयोग ॥ ३ ॥

विविध विधिकर रजिस्टर होवे, लिखित रहे शुभ योग ।
शाला प्रबंधित हो इन तेंहो, फलहै अगणित जोग ॥ ४ ॥

(५७)

समय विभाग का उपयोग ॥

रागनी बसन्त—ताल मध्यमान ॥

समय विभागहिं अस उपयोगो ॥
इन्स्पेक्टर जावें जब शाला में, तिम कहं है यह जोगो ।
समय विभागहिं सचेत देखो, शाला शाला लोगो ॥
केवल नाम रहोगो ॥ १ ॥
यदि विभाग कहं इत उत पावो, शाला निकाम जनोगो ।
जहां टंगित है दृष्टि के संमुख, सो उत्तम सु कहोगो ॥
पाठक नाम जमोगो ॥ २ ॥
समय भाग बिन काजन होवे, शाला नष्ट भयोगो ।
पाठक जन निज काज न जानें, शाला नाम धरोगो ॥
तब सो हानि जनोगो ॥ ३ ॥
समय विभाग राजाधिराजा, सदा सदैव बनोगो ।
बालक आपन कहं यह जानी, नौकर चाकर लेगो ॥
तब भल काज चलोगो ॥ ४ ॥

(५८)

नकशा खींचना ॥

रागनी सोरठ—ताल मध्यमान ॥

नकशा खींचो येहीरीति ॥
बड़बड़ पहाड़न नदि नद नारे, देश नगर सबहीति ।
गृह आंगन समदृष्ट आवें, रातदिवस कर जीति ॥ १ ॥
कृष्णा पाठमहं खींचि बताओ, बाहरि भाग सुरीति ।
जबे बाल यह खींचन लागें, आगे बढ़ो सुबीति ॥ २ ॥
धीरे २ सीम बताओ, देश प्रदे सुभीति ।

पहाड़ नदी आदिक बनाओ, नगर भीलिकी रीति ॥ ३ ॥
धीर धीर रंग भरन बताओ, निर्मल शुचि सबरीति।
नकशा खींचन मनु खेलन बहु, जानो सहज सजीति ॥ ४ ॥
प्रति प्रति वर्णित रीति कहीं, कृष्ण पाठ महं ईति।
पाठक यह समाह बतावे, फल अनेक हैं मीति ॥ ५ ॥

(५९)

परीक्षा पत्र ॥

राग बसन्त बहार—ताल एकताला ॥

परीक्षा पत्र लिखो या भांती ॥
स्पष्ट सुन्दर सम वाच्य अक्षर, निर्मल कलिन न जाती।
शब्द निर्मल अरु रेखा निर्मल, सबनिर्मल सब आती ॥ १ ॥
भल पोथी भल देखाभाली, अरंभो नित नवबाती।
अरंभो अरंभो अब लेखनतें, जो कछु आवत जाती ॥ २ ॥
उत्तम कागद उत्तम लेखनि, देत सिद्धुता साथी।
दाग बाग कछु होन न पावे, नित्त सुन्दर सब भांती ॥ ३ ॥
छोर छूटे निर्मल भली भल, भूल भटक लिखि जाती।
कछु भूलो लिखो तामांही, वाकोऊ नव बाती ॥ ४ ॥
कागद के इक ओर लिखो नित, जात समय बच जाती।
सुगम सुगम प्रश्न उतरो प्रथम, कठिन पाछ पटकाती ॥ ५ ॥
जितनो प्रश्न तितनो उत्तर, करु जनि जनि अधिकाती।
व्याकरण अशुद्धता कबहु नहीं, करो लिखो चतुराती ॥ ६ ॥
अनरथ कछुन लिखो तामाहीं, परीक्षक हार जाती।
उलटो पलटो कछु नहिं होवे, रहे रहे मन भांती ॥ ७ ॥
मोड़ो मोड़ो कागद अंतमहं, समय लिखन पश्चाती।
नाम कक्षा शाला तिथि मासहिं, लिखो सुन्दर चौड़ाती ॥ ८ ॥

(६०)

गणितोंकी सामग्री ॥

॥ दादरा—ताल उसीका ॥

सामग्री येहैं बिषय गणितन की ॥
भिनभिन भणित गणित अंकित वहु, शोधित बोधित पोथिनकी।
भिनभिन पाटी स्लेटन मांही, करो करो बहुप्रश्नन की ॥ १ ॥
बार बार लिखो कृष्ण पाठ महं, भल गणितन शोधो मनकी ।
गणितन ज्ञानी जनसों पूछो, हारे तुटीक गणितनकी ॥ २ ॥
मापतोल अरु आदिक पत्रन, लेखन पाई आननकी ।
रेखगणित में साध्य सूरत, लिखोतो लिखो भिन भिनकी ॥ ३ ॥
बिधिवत नक्शा फक्शा राखो, भिन भिन बहुते गणितनकी ।
शालाकृष्ण पाठ गृह पाटी, आदि आदि सबही मनकी ॥ ४ ॥

(६१)

कुरसी मेज ॥

रागनी भीमपल श्री—ताल मध्यमान ॥

कुरसी मेज न आवे काजा । सत्य श्रम कर साज सुसाजा ॥
कोउ पाठक बर्त्तै इमि भांती । तकिया शय्या अगणित जाती ॥ १ ॥
कुरसी शीश मेज पर पाई । धरि सोवें मनुनिद्रा आई ॥ २ ॥
जो आलसि सुस्तसोव समाना । शिक्षान जाने सोवन जाना ॥ ३ ॥
नहीं नहीं हे पाठक लोगा । कुरसी मेजहि मानु कुयोगा ॥ ४ ॥
प्रतिघंटा महं यदि जोचाहे । दसइक मिनिट बैठतो चाहे ॥ ५ ॥
श्रमकरि काज करो मनहींते । नहितर बिद्या आव कुरीते ॥ ६ ॥
कृष्ण पाठ कहं राजा जानो । काल नियम बड़ राजामानो ॥ ७ ॥
इहविधि काज करो सब लोगा । जाते आवें सुख संयोगा ॥ ८ ॥

(६२)

नृत्यमण्डल ॥

होली—ताल मध्यमान ॥

चलोरी चलोरी नाच नचाई, रानी भंवराई ॥
हंसि हंसिके चल गावें नाचें, हरष जनक भंवराई ।
योगिनि हो हरियाई ऊपर, मुख रानी बिहराई ॥ १ ॥
बरष बरष बन ऋतुके समान , फिरि फिरि एक घिराई ।
मैं हों उष्ण तुमहो ऋतुराज, मुख योगिनि किंदराई ॥ २ ॥
आली बनो जड़काल बनकी, सखा सुपात भराई ।
जड़पात झड़शीत ऋतुराई, मुखरानी किंदराई ॥ ३ ॥
वसन्त अरु उष्ण त्वरित जावें, कच सेत पतझराई ।
शीत काल ऋतुराई कर धर, नृत्यत हो भंवराई ॥ ४ ॥
बेग बेग हम फिरें सबेरी, गाल गुलाब ललाई ।
निज बश होवें जैसे पच्छो, मंडली नाचत भाई ॥ ५ ॥

(६३)

शाला सामान ॥

दादरा—ताल उसीका ॥

शाला सुसाजा ऐसो सजाओ ॥
प्रति कक्षाकर बैठक सैठक, मेज़बेंच सब अलग लगाओ ।
जाते गड़ बड़ होवे नाहीं, भिनभिन भांतिभांति अतिभाओ ॥ १ ॥
सबकर बैठक ऐसी होवे, पाठक सब कहं देखन पाओ ।
दूरपास कतहूं सब होवें, अर्धकार सीधे बैठाओ ॥ २ ॥
लिखन मेज़ भीतिनसे राखो, कृष्ण पाठ इमि भांति लगाओ ।
पाठक देखें बालक लोकें, गड़बड़ सड़बड़ होनहिं पाओ ॥ ३ ॥
जहां लगि बने स्थान थोरो, पूरण पारण साज सजाओ ।
शुचि मनचित हित ध्यान लगाई, भली शिक्षा सबरीति बताओ ॥४॥
कुरसी मेज़हिं माटी जानो, मेज़ चरण कुरसी न लगाओ ।

कृष्णपाठ लागे सकलन विधि, अलमारी बहु भांति सजाओ ॥ ५॥

(६४)

चिट्ठी लिखना ॥

चुटकला—ताल दादरा ॥

पाती चपाती ऐसी लिखोरे ॥
छोट बड़ेन कहं लिखन की रीती, रीतिबार बहुविधि परखोरे ।
पुनि भल भल विषय लिखन कर हेतू, पहिलेसे चुनिके सुरखोरे ॥१॥
चुनोसो विषय इमि भांति पाठको, लरिकन ताही जानत होरे ।
कठिन विषय जनि कबहूं तो देहू, जो लरिकन ते नाहिं बनोरे ॥२॥
जहां जहां बालक भूल करत हैं, तहां ताकहं सुधारि रखोरे ।
सर्वोत्तम तब बालक प्रशंसो, सबमिलि तब ताकहं निरखोरे ॥ ३ ॥
उत्तम भाषा अरु उत्तम लिखना, सबहिं भांति प्रेरणा करोरे ।
पुनि उत्तम पाती लरिकन संमुख, पढ़िकर लिखकर सुनालिखोरे ॥४॥

(६५)

निबन्ध लिखना ॥

रागनी परज— ताल तिताला ॥

पाठकवा निबन्धऐसो कीन्हो जाय, यदिदत्त प्रदत्तलिखवइयारे ॥
निबन्धको निबन्ध लिखनोको लिखनो,
यदि निपुण प्रवीणहो करवइयारे ॥ १ ॥
वर्णन के योगी निबन्ध को लिखनो,
नाम स्थान लाभ रखवइयारे ॥ २ ॥
कथन के योगी निबन्ध को लिखनो,
वृत्तान्त फल शिक्षा करवइयारे ॥ ३ ॥
विचारन योगी निबन्ध को लिखनो,
परि भाषा प्रकार फल बतवइयारे ॥ ४ ॥

(६६)

निबन्ध लिखना॥

खमाचकी ठुमरी—ताल मध्यमान॥

निबन्ध को बन्धबँधे या भांती॥
निबन्ध शब्द कर उत्पत्ति आदिक, प्रकाराकार जो आती।
परि भाषा करि उदाहरण देदे, रचो रचो सब जाती॥ १॥
पर विषयन सों संबंध डारी, सुफल अफल सब भांती।
सुयोग कुयोगहों सब दिखलाई, लिखो लिखो मन राती॥ २॥
जो कछु छूटे सब कहं भरदेवो, समझावे समझाती।
सूक्ष्म लेखन सुसार सब आवे, रच रचना सुन्दराती॥ ३॥

(६७)

धुनिधृति॥

रागनी बसन्त—ताल मध्यमान॥

अहो बाल लोगो, अहो बाल लोगो, धुनि धृति धाओ॥
हेरि कील कहं सुठीक बालक, नोकहिं मार लगाओ।
मारो मारो निज बल बालक, जबहीं लोह भलाओ॥
लाल लाल ह्वै आओ॥ १॥
तुम कहं काज करनहै बालक, करहो मनहिं लगाओ।
जो पहुंचत है शिखा बालक, पहिले प्रथमहिं धाओ॥
चढ़त चढ़त गिरि आओ॥ २॥
ठाढ़े होओ पद बल बालक, निरखत नभ के मांहो।
कैसे तुम पहुंचोगे बालक, यदि तुम कबहूं मांहो॥
कबहु न यतन कराओ॥ ३॥
यदि तुम ठोकर खाओ बालक, कबहु न होतर मारो।
करहो यतन करो पुनि बालक, सुफलित होवें धारो॥
धारि अन्तहीं आओ॥ ४॥

(६८)

शुद्ध लिखना ॥

रागनी भीमपलश्री—ताल मध्यमान ॥

शुद्धलेखन इमि भांति सिखाओ। जातिअशुद्ध होय न पाओ ॥
लेखन सुधरे अक्षर सुधरे, अभ्यास अक्षर पड़ जाओ।
पाठपाठन सम सबक होवे, दिन दिन प्रति दिवस धराओ ॥ १ ॥
शाला महं सो लेखन देई, लेखन सुभांति लिखवाओ।
कठिन कठिन शब्द निकारी, सहित लेखन सुबतलाओ ॥ २ ॥
भली भांति पुनि जांचो लेखन, अशुद्ध शब्द पुनि अलगाओ।
वही पाटि महं दश दश बारहिं, लरिकन सुशुद्ध लिखवाओ ॥३॥
तुमहिं जानो परीक्षक कोऊ, लिखवावे पाठ पढ़ाओ।
वा पूछत पढ़े पढ़े शब्दन, अशुद्धता होयन पाओ ॥ ४ ॥

(६९)

कवायद ॥

ठुमरी—ताल मध्यमान ॥

कवायद लोगो अवसि सिखाओ ॥
यदपि पोलिस कर चाकरी नाहीं, रण चढ़ नाहीं आओ।
तदपि चंचलता बहुती चपलता, मन दृढ़ता बहु पाओ ॥१॥
कर पद फुरती बहु बल देहहि, श्रम न व्यापन पाओ।
शरीरकर बल बहु बाढ़त जावे, मन बल बुद्धि बढ़ाओ ॥२॥
यदपि पूर्ण कवायद नहिं भावे, सार सार ले आओ।
जितनी ते आपन फुरती होवे, तितनी आनि बताओ ॥ ३॥

(७०)

उल्थाकरना ॥

ध्रुपद ॥

रागनीखमाच—ताल चौताला ॥

भाषा उल्था प्रति इक केरो, ससुन्दरता ठीकता हेरो,

करो करो बिना अन्तर आन ॥
जोजो भाषा उल्था करनो, तताके प्रति शब्द चुनिबरनो,
मन माहिं वा कहिके मन मान ॥ १ ॥
जा भाषा महं उल्था करहो , ताभाषा की रचना रचहो,
कर्त्ता क्रिया आदि अनुमान ॥ २ ॥
इमि भांति वाक्य रचना करके , जा भाषा महं उल्था भरके,
रीति ठीक शुभ उल्था सुआन ॥ ३ ॥

(७१)

उल्थाकरना ॥

ध्रुपद ॥

रागनी खमाच—ताल चौताला ॥

भाषाभाषा उल्था सुन्दर , प्रतिप्रतिमाहीं लावो, बढ़कर,
करो करो सो बहु रीति वार ॥
उल्थित भाषा शब्द शब्द वर , ठीक ठीक भाषा उल्था कर,
राखो राखो बहु सोच वार ॥ १ ॥
जा भाषा महं उल्था होवे , ताकर शब्द ठीक प्रति होवे,
ताही कर वाक्य रचन वार ॥ २ ॥
ताही कर कर्त्ता क्रिया कर्म , आदि शब्द ले रचना बर,
धरो धरो सुन्दरता सुवार ॥ ३ ॥

(७२)

उल्था ॥

ध्रुपद ॥

रागनी भूपाली—ताल पटताल ॥

उल्था करन नलाभ जनव, बहुत बहुत रे ॥
अगणित भाषा सुन्दर भाषा, आवतहै सहज सहजरे ॥ १ ॥
निज मन माहीं सोच सोचके,मनु लाभ लाभहै कितरे ॥ २ ॥

(१३)

समाचार पत्र

रागनीभैरवी—ताल श्लथ तिताली

हेफल अनेक हैं जाते, समाचार पत्र पढ़ो ॥
विधिविधि बहु भांती, योग्यता आती,
बहु बहु वृतान्त सुनाती, समाचार पत्र पढ़ो ॥ १ ॥

(१४)

शब्द कोष ॥

ध्रुपद ॥

रागनी देवसांग—ताल झांपताल ॥

सदैव पुनि सर्वेत्र, कोष सुकोषज पत्र, जब जब कछु जान न चाहि निहारो ॥
कोष कहं निहारत, संदेह सब भागत, अनजान जान हो तुमहि बिचारो ॥ १ ॥
यदिसों नहिं जानत, जानत सो जानत, का का आनन्द मन महं सो डारो ॥ २ ॥

(१५)

समय व्यय ॥

रागनी देश—ताल मध्यमान

समय नित निरखो सुमोलवान ॥
मन उमंगता अरु सुलहरता, हीनता लग बहु आन ।
इनतें समय हिं सदैव टारो, लगाइ अति मन लगान ॥ १ ॥
भल भल कार्य पाठन लेखन, जीवफल हित नित मान ।
सुनाम कीरति फल दायक बहु, काजहो समय बितान ॥ २ ॥
अस करि लोको मन महं सोचो, काका फल हमहिं आन ।
निरखो ताकर जो खोवत है, काका फल सो उठान ॥ ३ ॥
नामी कवीश अरु ग्रन्थकार, बलवान नृप धनवान ।

काल काज भलभंये बितावत , सत्य सत्य मनहिं मान ॥४॥
जोजो खोये समय कहं व्यर्थ , तिनकर भई बड़हान ।
इह लगि गये नाम गाम सब , रीते सुभये निदान ॥ ५ ॥

(१६)

सत संगति ॥

रागनी बसन्त—ताल मध्यमान ॥

सत संगति गुण कहं लगि गाई ॥
सत संगति ते ईश मोहहीं , मात पिता मोह जाई ।
मोहत भ्राता भगिनी सगमी , मित्र सित्र सब मोहाई ॥
सत संगति सुप्रभाई ॥ १ ॥
हीरक हाटक माणिक मोती , सुवरण धन बहुताई ।
जगत सकल कर परम आनन्द, गन्ध सुगन्ध समटाई ॥
नाहिं करत समताई ॥ २ ॥
तुमहीं सोच सुविचार देखो, सत संगति सुप्रभाई ।
इहते इहते करहो सबहीं, शठहिं सुधारत आई ॥
सत संगति भल भाई ॥ ३ ॥

(१७)

सत संगति ॥

रागनी खमाचकी उपपदी ठुमरी—ताल मध्यमान ॥

सत्य सत्य सतसंगति सारी , तन मन हित चितते हितकारी ॥
सत संगति ते दोष ढंपतहैं, नाम होत अति भारी ।
भलभल शिक्षा कर लागतहे, अगणित फल दातारी ॥ १ ॥
जगत केर सब काज सुधरहीं , भल भल पथ गत वारी ।
जाते सकलन बातन माहीं , फलप्रद हो बहु प्यारी ॥ २ ॥
जगत विदित सत संगति अतिहै , वर्णनते नहिं न्यारी ।
सब जानतहैं भल जन करहीं , सत संगति सुखकारी ॥ ३ ॥

(१८)

आज्ञा का मान व अमान ॥

ध्रुपद ॥

रागनी देव सांग—ताल झांपताल ॥

आज्ञा अति पालो, खेदन बहु पालो, तन मन धन हित मित सम जन जानो ॥
आज्ञा अति पालन, सबहोवे लालन, जनक जननि भगिनि सबनि मन मानो ॥ १ ॥
आज्ञा भंग रंग, सुरंग उमंग अंग, जनि सपन मनहि कबहूं नहिं ठानो ॥ २ ॥
बड़ी बड़ी हानी, नहिं माने आनी, माने आनी भल फल मन आनो ॥ ३ ॥

(१९)

सभा ॥

होली—ताल मध्यमान ॥

सभाके अवैया, सभा के अवैया, ऐसो फाग मचाओ ॥
देह सुमन को बासन भारी, परिश्रम रंग रंगाओ ।
दृढ़ता पिचकारी मूढ़ सुबुद्धि । धुमि धृति अबीरलाओ ॥
धैर्य्य गुलाल उड़ाओ ॥ १ ॥
दुःख सहन केर केसर बस्तर, दक्षता अतर लगाओ ।
भलाई भली सुताल मृदंग, फाग एकता गाओ ॥
पटुता कबीर सुनाओ ॥ २ ॥
योग्यता सुफूंकि पिचकारी, निबन्ध लेख रंगाओ ।
बादानुवाद बहु रंग डारी, सार अंश भंग खाओ ॥
देशी मद मद लाओ ॥ ३ ॥
सभासद लोग इह भांति खेल, गारी तर्कना गाओ ।
भल भल विषयन सारहि लेले, मोर नाम फल पाओ ॥
ऐसी होरि मचाओ ॥ ४ ॥

(८०)

मधुर भाषा ॥

खयाल ॥

रागनी सोहनी—ताल आड़ा ठेका ॥

सुमधुर भाषा भाषहु सदासदाये ॥
सुमधुर भाषा व्ययन करावे, छिगते न जातकछु यदा यदा ॥ १ ॥
सुमधुर भाषा सबकहं मोहत, जनप्रिय पुनि फलप्रद तदातदा॥ २ ॥

(८१)

कटु भाषा ॥

खयाल ॥

रागनी सिंधु—ताल मध्यमान ॥

हे लोगे मम प्यारे , भाषह कटु कटु खेदी जनि उच्चारो ॥
कटुकटु बानी, खेद सुश्रानी, छोटबड़े सबकहं बेधतडारो ॥ १ ॥
घृणासुकरहीं, काजनपरहीं, कुनाम धरहीं कटुतेमनटारो ॥ २ ॥

(८२)

सभालाभ ॥

रागनी आसावरी—ताल मध्यमान ॥

लाभ सभा सोंकाका आहीं । अगणित अभगित सु-
अमित सुकथित, बहुत सभा के माहीं ॥
राज्य सु सुधरें पुनि सुद्रु नीतें, राजन दोष नशाहीं ॥
विद्या बाढ़े प्रमता भाजे, आपन लोगन माहीं ॥ १ ॥
लोक व्यवहारी कार्य्य बनत, भांति भांति फल पाहीं ॥
देश देश महं सुनयन लोको, लाभ लुके कत नाहीं ॥ २ ॥

(८३)

सभा ॥

रागनी कल्याण—ताल तिताला ॥

लोगो सद असपूजा धारो । काय बचन मन

हित चित रतसों भल भल मन करि डारो ॥
भली सभाकर रूप आनकर, मनहि आनि पुनि धारो ।
निर्मल सुबुद्धि निर्बल बारी, कराहु स्नान कारो ॥ १ ॥
परिश्रम सुपुहुप भांति भांतिके, धुनिधृति सुगंध डारो ।
साहस केरी चामर करहो, बच पटुता धा डारो ॥ २ ॥
योग्यता नैवेद्य लागे, निबंध आरति बारो ।
ऐक्यमता सुबर भल मांगो, लोग लाभ फल धारो ॥ ३ ॥

(८४)

स्वच्छता व कपट हीनता ॥

रागनी झंझोटी—तालमध्यमान ॥

अहोप्रियलोगो, अहोप्रिय लोगो, लेहुस्वच्छतातनमम माहीं ॥
मनी स्वच्छता, बचन सत्यता, विश्वास पुनि संदेह नाहीं ।
बुद्धि निर्मलता, मनैक्यदृढ़ता, बुद्धिहीनता जातनसाहीं ॥ १ ॥
बचन सत्यता, लोक सुप्रियता, होत बास भल सबके पाहीं ।
सकलमूलता, होत स्वच्छता, जातेसबफल आवत आहीं ॥ २ ॥
तन स्वच्छता, दय आरोग्यता, रोग बिरोग जाहीं नसाहीं ।
मूल सुरचता, रूप सुन्दरता, सबहीके मनजोबहुभाहीं ॥ ३ ॥
दरश शिष्टता, लोक सुप्रियता, उपजत रत बहुते इहमाहीं ।
अस स्वच्छता, निस्सन्देहता, तजिलेबो मन अपनेठाहीं ॥ ४ ॥

(८५)

सृष्टिस्वरूपता ॥

॥ रागनी कान्हड़ा—ताल तिताला ॥

रचना सुसृष्टि बढ़त घटत, समेत बिस्तारा ॥
पूर्णता छांड़ि सृष्टि अपारा । नष्ट होतजलरूप अकारा ॥ १ ॥
यदि इहतोसो दूसर रूपा । पुनिबगरतसो सृष्टि स्वरूपा ॥ २ ॥
इहइह भांतिरूपपलटाहीं । भवलयइनकरनामकहाहीं ॥ ३ ॥
सजीव निर्जीव वस्तु अनेका । उपजत भिन्न एकतेएका ॥ ४ ॥

सुधरत बिगरत होहिंविभेदा। इहिविधिआवे पूर्णअभेदा ॥ ५ ॥
विश्वरूप जिहिकह सबलोगा । नहितर निर्गुणरूपअभोगा ॥ ६॥

(८६)

मानसिक स्वच्छता ॥

होली—तालमध्यमान ॥

मन महं स्वच्छता ऐसी होरी मचाओ ॥
शीलता केर रंग बनाई, सुकाज छींट लगाओ ।
सुमधुरता कर अबीर गुलाल, दृढ़ता मुखहिं भराओ ॥
जनरत अगर लगाओ ॥ १ ॥
दया कृपा कर केसर बस्तर, करुणा पिचका आओ।
शीलता रंग ता महं बोरी, भल यश छींट चलाओ ॥
सुनाम यश रंग पाओ ॥ २ ॥
मूर्खता त्यागन झांझ सुडफरी, संशय नाश बजाओ ।
विश्वास धारन ढोल नगारा, सत्यता गारी गाओ ॥
मनरत गारी खाओ ॥ ३ ॥

(८७)

दैहिक स्वच्छता ॥

होली—ताल मध्यमान ॥

तनमें स्वच्छता खेलहु होरी ऐसी ॥
निर्मल वस्तर केसर वस्तर, निर्मलता रंग जैसी ।
झाड़ब पोछब कर पिचकारी, ढांपहु मलता तैसी ॥
अंश सुगलाल वैसी ॥ १ ॥
नयन नासिका अरु कर्ण केरा, चन्दन चोवा जैसी ।
जिह्वा त्वचा केर विमलता, लेहु भला सब वैसी ॥
गृह कर अबीर तैसी ॥ २ ॥
निर्मल भाजन झांझ सुडफरी, बाज बजावहु तैसी ।

विमल विमलता गारी गावो, खावहु गारी कैसी ॥
तन निरोगता जैसी ॥ ३ ॥

(८८)

मानसिक स्वच्छता ॥

रागनी केदारा—ताल तिताला ॥

लोग सुनो, मन स्वच्छता लेहु भल ॥

मलता घिन्नकरहु बरबीजा। बोश्रहुहठ धरतीमहं सीजा ॥ १ ॥
सुभावनिर्मलता बरबारी। सींचहु बहुबिधि छींटप्रचारी ॥ २ ॥
मलहीनता कंटक विकासा। रूंधहु भूमि बीज असपासा ॥ ३ ॥
स्वच्छता लखअंकुरजामें। अच्छतादरस कोम बहुतामें ॥ ४ ॥
असंशयता डार बहुतेरे। विश्वसता बहु पात घनेरे ॥ ५ ॥
बचन सत्यता पुष्प बहुऊगे। लोक प्रेमतासो फल पूगे ॥ ६ ॥
पाकहिंतेफल एकतेएका। पाइकाज भल जातिअनेका ॥ ७ ॥
मधुर रसभा लोक उपकारा। हरषानन्द छांव अनुसारा ॥ ८ ॥
पीवहुसोरसअति हितमानी। खावहुसोफलरतरसमानी ॥ ९ ॥
मननिरोगताआवसुभांती। नाश कपट अज्ञानता जाती ॥ १० ॥
लोकबिघ्नआवहिंइहमाहीं। सड़ितगलितफलफूलसुजाहीं ॥ ११ ॥
त्यागहुसो फलफूलघनेरे। नाशत कपट आदि रोगेरे ॥ १२ ॥
मनस्वच्छता वृच्छइहठाहीं। भयोभयो लोकहु मनमाहीं ॥ १३ ॥

(८९)

दैहिकस्वचछता ॥

रागनीमुल्तानी—तालतिताला ॥

तनस्वच्छता पूजो भांतिअसी ॥

गेह आंगन बिमलता लाई। पूजनीय राखहु बैठाई ॥ १ ॥
घिन्न हीनता करवर बारी। स्नान करावहु बिबिधप्रकारी ॥ २ ॥
करण नासिका नेचमकेरा। अच्छता चन्दन अच्छत हेरा ॥ ३ ॥
पुहुप बस्त्र स्वच्छता माना। आसन शय्याकरबेल पाना ॥ ४ ॥

भोजन निर्मलताबहुभांती । देहु नैवेद्य अगणित जाती ॥ ५ ॥
जलनिर्मलता करबरपानी । पान करावहु मनमहंठानी ॥ ६ ॥
पान सुपारी देवहु माना । अपर बस्तु निर्मलता नाना ॥ ७ ॥
करण नासिका नेत्रन केरा । स्वता सुधूप देवहु नेरा ॥ ८ ॥
कर्पुर जीभ स्वच्छता जानी । जीभस्वता दीपक मानी ॥ ९ ॥
इहि बिधि करहु आरतीजारी। अर्घ शरीर भाग कर वारी ॥१० ॥
इह बिधि पूजहुसुपूजनीया। सुस्वच्छतातन अतिकमनीया॥११॥
निरोगताबर इहि बिधिपाहू। मरी आदि बहुरोग नशाहू॥१२॥
तन स्वच्छतापूज्य इह ठाहीं। भईभईलोकहु तनमाहीं ॥१३ ॥

(९०)

कामादिक रिपु ॥

रागनी काफी—ताल मध्यमान ॥

हे लोगो होहु जनि बश माहिं । काम कोप मद
मत्सर मोहा, लोभ कुविकट अति आहि ॥
काम कर निर्बल कोप अति दहन, मदस्वनाश होजाहिं ।
मत्सर निष्फल मोह बिगारत,लोभ स्वता निज नशाहिं ॥१॥
ये षटरिपु सब नित नित ताकहिं, बल भरदेहिं नशाहिं ।
इनकहं कबहूं ठौर नदेवो , पौरुष जीति इनकाहिं ॥ २ ॥

(९१)

उत्तम चाल ॥

रागनी योगिया—ताल मध्यमान ॥

भलभल चालन चलो चलोहो, चालन चाल सुचालहो ।
उत्तम चाल चलनते लोगो , सबके सब अति प्रसन्न हो ॥
मात पिता गुरु भ्राता भगिनी, प्रेम करहिं मन रंजनहो ॥ १ ॥
रतादि करनते तुमहिं साचो, कसकस बहु पावत हो ।
जग कर काज कर सब निकरे, सुनाम सुनाम आवतहो ॥ २॥

(९२)

कृपा ॥

ध्रुपद

रागनी ललित—ताल तेवरा ॥

थलचर जलचर नभचर सबपर, दया मया सुकृपा
करुणाकर, कर तन मन धन बल निजपर कर ॥
निज मन समतिन सबकर मन मनि मनमहं धर कर ॥ १ ॥

(९३)

सत्यता ॥

ध्रुपद

रागनी ईमन कल्याण—ताल चौताला ॥

सांचो बोलो सांचो चालो, सांचो करनी सांचो कार
सांचो प्रवर्त्त सांचो चाल, सांचो सांचो सबहि धार ॥
सांचो मात पिता सब चाहैं, आन आन जन सबजा माने,
धरम हमारो सांचो व्यवहार ॥ १ ॥

(९४)

मिथ्या ॥

ध्रुपद

रागनी ईमन कल्याण—ताल चौताला ॥

असतन बोलो असतन चालो, असत न करनी असतनकार
असतन प्रवर्त्त असत न चाल, असत असत नहिं कबहुंधार
असतहि सबकोउ घृणाकरहीं, जाते सबजन कुनाम धरहीं,
पाप बड़ो है असत्य व्यवहार ॥ १ ॥

(९५)

दान ॥

रागनी खमाच—ताल जलद तिताला

भल भल दान सुभलो भलोहो ॥

निजबल जहंलगि विस्तृत होवे, तहंलगिकरि करिलो हो ।
तनमन धन जोकछु सोहोवे, करि करिचलो चलोहो ॥ १ ॥
नाम नाम यश कीरति बाढ़े, लोगन भलो भलो हो ।
सोचविचार तुमहिं मनलोके, सबबल फलोफलोहो ॥ २ ॥

(६६)

सहायता ॥

ध्रुपद

रागनीसिंधु—तालतेवरा ।

सहित सहाय सुसहाय करहो, जो भली भली ।
तनसे मनसे धनसे बचसे, यदि चली चली ॥
निर्बल बल है बली बली बल, हो बली बली ।
प्रति अवसर महं सब बातनमहं, यदि चली भली ॥ १ ॥

(६७)

नाम ॥

लावनी

चलोयार सबनाम कमावें, हासिल नाम अजब शयहै ।
उमदा उमदा नामवरे सब, करना काम नाम मयहै ॥
पढ़ना लिखना हुक्म बजाना, करना कहना इनसबका ।
मा बापों का और बड़ों का, उस्तादों का हो कबका ॥ १ ॥
चाल पकड़ना भली भलीपर, गाली गलौज नहिं करना ।
दंगा लड़ाई फ़िसाद झगड़ा, इनबातों में नहिं मरना ॥ २ ॥
पढ लिखकर जब तैय्यार हुए, पेशा लेवे नामवरी ।
देनाइल्मका बना किताबें, जबके लियाक़त आभरी ॥ ३ ॥
कुंवा बावली बाग़ बाग़चा, खुदवाना फिर बनवाना ।
पैसाहोवे उमदा उमदा, ऐसेहि काम करवाना ॥ ४ ॥
देखो यारो गैार के साथ, अदना शाह नाम मयहै ।
कमाकमाके इन्तक़ाल किये, नाम कमाना क्याशयहै ॥ ५ ॥

(९८)

मनैक्यता ॥

ध्रुपद

रागसोरठ—तालतेवट

लोगो, एकता करो, समता सुरहोरे, लोगो एकता करो,समता सुरहोरे, लोगो ॥

एकताकियेहैंफलसुअनेकन, जेवरिमिल बांधेकरिनी, लोगो ॥ १ ॥

(९९)

गीतचन्द्रिका ॥

आरती

जय गीते जय गीते, जय चन्द्रिका रानी ।
आरती शुभग तोरी, मन महं अस ठानी ॥
पढ़न लिखन गणितादिक, विषयनभरमानी ।
शाला बंधित अनेकन, शुभ बातन जानी ॥ १ ॥
मुनिभल उपदेश भरित, शिशु पाठक हेतू ।
जानि जानि रानी जी, पावहिं सुख केतू ॥ २ ॥
विधिविधि राग रागनी, शुभ ताल समेता ।
गावत हो परमानन्द, कहिन जाय जेता ॥ ३
अन्तहोत गीता अब, चन्द्रिका शुभरानी ।
गवाय पढ़ाय पढ़ के, हर्ष मनमहं आनी ॥ ४ ॥

(१००)

गीतचन्द्रिका ॥

आरती

आरतिगीतचन्द्रिकाकेरी । इहबिधिलागतमनमहंहेरी ॥
सकलनपचन सुन्दरभारी । त्रिषयनसबमिल दीपकधारी ॥१॥

रागरागनी सुन्दर नाना । बिधिवत घृतकर्पूर रस माना ॥ २ ॥
तालन आदिक बातीबारी । नादनि करहीं प्रकाशकारी ॥ ३ ॥
जिह्वा कण्ठआदिमहं लेहू । मानहुं कर धरसुन्दरयहू ॥ ४ ॥
बाजनविधिविधि बाजनबाजे । मानहुंसाज आरतीसाजे ॥५॥
अन्त करन मनुजलफिरवांई । गीतचन्द्रिकाअन्तजुआई ॥ ६ ॥
करहोआरति इहविधिमाई । अर्थानन्द शुभग बरणाई ॥ ७ ॥
इहहर्षजानहिंगायकलोगा । गायम विद्याप्रदसुखभोगा ॥ ८ ॥
मनमहंजोकछुआनंदआवे । पाइजोभ मनकहिनहिंपावे ॥ ९ ॥

समाप्त